श्रीजी साहेबजी के फुरमाऐ

कुरान के (हदीसोके) ज्वाब स्वाल

प्रकाशक
श्री निजानंद आश्रम
वडोदरा

Nijanand App

श्रीजी साहेबजी के फुरमाऐ

कुरान के (हदीसोके) ज्वाब स्वाल

प्रकाशक

श्री निजानंद आश्रम

वडोदरा

Nijanand App

प्रस्तावना

ढूंढे शब म्याराजको, शब म्याराजमें साब ।
सो शब म्याराज जाहेर करी, सो शब म्याराज देखसी अब ।।

आतम संबंधी सुंदरसाथजी,

आखरुल जमां इमांम मेहेंदी स्वामी श्री प्राणनाथजी ने अपने कुलजम स्वरुप ग्रंथ में सनंध, खुलासा, मारफत सागर, क्यामतनामा किताबों के माध्यम से कुरान के माजजा और नबी की नबुवत को जाहिर किया है । उनके श्री मुखारविंद से अवतरित पवित्र जोस की बानी चोपाईओं के रुप में श्री कुलजम स्वरुप ग्रंथ में समाविष्ट है, जो श्री निजानंद संप्रदाय के हर धर्मस्थानों में मिलता है । गद्य रुप में लिखी गई उनकी होंश की बानी - (१) कुरान के ज्वाब - स्वाल (२) मीरांजी - सेखजी का ब्यांन (३) क्यामतनामा - तीसरा (४) पत्री कुरान की (५) जाम-ए-उल-मारफत (६) छत्रसाल प्रबोध (७) तौरेत पर प्रश्न (८) बिहारीजी को पत्र (९) कुरांन की प्रगटवाणी इत्यादि है, किन्तु इनमें से एक भी प्रकाशित नहीं है ।

श्री निजानंद आश्रम वडोदरा के दशाब्दि महोत्वस के उपलक्ष में श्री कुलजम स्वरुप साहेब १२०० पारायण महायज्ञ एवं पूज्यपाद सरकार श्री के चतुर्थ स्मृति महोत्सव में बडे आनंद और गौरव की बात है कि आपके हाथ में **श्रीजी साहेब के फुरमाऐ कुरांन के ज्वाब - स्वाल** नामक ग्रंथ है । हस्तलिखित प्रत जैसी पाई थी, तैसी ही प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है । जो ज्वाब - स्वाल हादी ने फुरमांए थे, तिनमें एक हरफ ज्यादा या कम नहीं किया । हमें दो हस्तलिखित प्रत मिली है । जो स्वाल या ज्वाब एक प्रत में है, और दूसरी प्रत में नहीं है, उसको ( ) में रखकर हमनें ओर ज्यादा सच्चाई को उजागर करने का प्रयास किया है । सनंध प्रकरण - २० को साथ में इसलिए रखा है, ताकि कुरान के ज्वाब-स्वाल के साथ-साथ,इमांम मेहेंदी स्वामी श्री प्राणनाथजी की पूर्ण पेहेचान हो सके ।

कुरांन के ज्वाब - स्वाल के मांएने हादीने मोमिनों को कहे हे, तो हुकम से मोमिन - सुंदरसाथ को सिर पर लेना जरुरी है । ताकी साख ए चौपाई -

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज लों (अब तक) न खोले किन
बातून जो कुरान के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल ।

- बडा क्यामतनामा - ३/२७

श्रीजी साहेबने बका का दरवाजा खोला है । उनको तन हम सब सुंदरसाथ है । हमको हादी बुलावते है । इमांम मेहेंदी से मिलाप हमेसगी का सुख लेने के लिए, इलम लदुन्नी से जाग्रत होकर, अपनी सूरत हक-हादी के कदमां बाँधना जरुरी है ।

आशा है आप समस्त श्री मोमिन - सुंदरसाथजी इस ग्रंथ की पवित्रता को ध्यान में रखकर सहर्ष स्वीकार करेंगे ।

धर्मोपदेशक
श्री निजानंद आश्रम
पोस्ट - सयाजीपुरा,वडोदरा-३९० ०१९

आपकी चरणरज
बालुराज निजानंदी

Nijanand App

ढूंढे शब म्याराजको, शब म्याराजमें सब ।
सो शब म्याराज जाहेर करी, सो शब म्याराज देखसी अब ॥

श्री किताब कुरान माफक सनंधे असराफीलें आखिर में,
कुरान को गाया हें, सो अपनी सरत पर जाहेर हुई हें ।

तिनकी ए सनंधे दुलहिन किताब आसमानी हम नाजी फिरके में,
आखिर को महंमद मेहेदी ले उतरे हें, सो वास्तें रुहों के ।

सनंध फुरमानकी

फुरमान ल्याया जो रसूल, पर समझ्या नाहीं कोए ।
जिन खातिर ले आईया, ए समझेगी रूह सोए ॥ १ ॥

कछुक नबिऐं जाहेर किए, ए जो बंदगी सरियान ।
केतेक हरफ रखे गुझ, सो करसी मेंहेदी बयान ॥ २ ॥

और भी केतेक सुने रसूलें, पर चढ़े नहीं फुरमान ।
सो (महंमद) मेहेदी खोलसीं, इमाम एही पेहेचान ॥ ३ ॥

माएने इन मुसाफ के, कोई खोल न सके और ।
कह्या रसूलें इमाम थें, जाहरे होसी सब ठौर ॥ ४ ॥

मगज माएने मुसाफ के, सो होए न इमाम बिन ।
सो इत बोहोतों देखिया, पर सुध ना परी काहू जन ॥ ५ ॥

गुझ का गुझ कौन पावहीं, बिना मेंहेदी इमाम ।
ए रुहअल्ला जानहीं, मेरे अल्ला के कलाम ॥ ६ ॥

ए क्यों उपज्या है क्या, क्यों क्यामत संग सुभान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ७ ॥

क्यों फरेब से न्यारे रहिए, क्यों चलिए सरियान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ८ ॥

Nijanand App

रुह कौन मोमिन कौन मुसलिम, कौन रुह कुफरान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ९ ।।

तीन रुहों की तफावत, कौन कौन ठौर निदान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। १० ।।

क्यों इस्क क्यों बंदगी, क्यों गफलत गलतान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ११ ।।

क्यों पाक ना पाक क्यों, क्यों रेहेनी फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। १२ ।।

क्यों उजू निमाज क्यों, क्यों कर बांग बयान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। १३ ।।

क्यों कसौटी अंग की, क्यों रोजे रमज़ान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। १४ ।।

क्यों सुंनत क्यों इंद्रियां, क्यों राखे कैद आन ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। १५ ।।

क्यों तसबी क्यों फेरनी, क्यों कर नाम लेहेलान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। १६ ।।

क्यों डर क्यों बेडर, क्यों खूंनी मेहेरबान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। १७ ।।

क्या खाना क्या पीवना, क्या जो सुनना कान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। १८ ।।

क्या लेना क्या छोड़ना, क्या इलम क्या ग्यान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। १९ ।।

Nijanand App

क्यों भली बुरी क्यों, क्यों कर जान अजान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। २० ।।

कौन वैरी कौन सजन, क्यों कर सब समान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। २१ ।।

क्यों हक क्या हराम, क्या नफा क्या नुकसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। २२ ।।

क्यों आवन क्यों गवन, क्यों कर विरहा मिलान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। २३ ।।

एक खेल दूजा देखहीं, थिर चर चारों खान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। २४ ।।

ए किया जिन खातिर, आदम और हैवान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। २५ ।।

कौन आप और कौन पर, कौन सकल जहान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। २६ ।।

क्यों बाहेर क्यों अंदर, क्यों अंतर के निसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। २७ ।।

कहां भिस्त कहां दोजख, क्यों जलसी कुफरान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। २८ ।।

क्यों आदम क्यों पैगंमर, क्यों फिरस्ते पेहेचान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। २९ ।।

कलमें दीन रसूल की, सुध मुसलिम फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३० ।।

Nijanand App

रसूल आए किन वास्ते, किन पर ल्याए फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३१ ।।

क्यों हुकम क्यों कर हुआ, किन बिध लीजे मान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३२ ।।

एकों क्यों कर मानियां, क्यों लिया न दूजे मान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३३ ।।

किन मान्या न मान्या किन, किन फेर्‌या फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३४ ।।

क्यों कैद बेकैद क्यों, क्यों दोऊ दरम्यान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३५ ।।

क्यों ए इंड खड़ा किया, क्यों करी सरत फना निदान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३६ ।।

क्यों बड़ी अकल आगे आवसी, क्यों आखिर के निसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३७ ।।

बंदगी वजूद नफसानी, नासूत बीच सरियान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३८ ।।

क्यों दिल की बंदगी तरीकत, मलकूत या ला - मकान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३९ ।।

(क्यों) नासूत मलकूत जबरुत, क्यों लाहूत चौथा आसमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ४० ।।

क्यों रुहें भेद छिपी हजूरी, बंदगी हादी संग आसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ४१ ।।

मलकूत ऊपर जो जुलमत, नाम बुरका ला - मकान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४२ ॥

सरीयत तरीक्त हकीकत, मारफत हक पेहेचान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४३ ॥

बेचून बेचगून बेसबी, कहे बेनिमून निदान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४४ ॥

निराकार निरंजन सुंन्य की, ब्रह्म व्यापक माहें जहान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४५ ॥

पुरुख प्रकृती कालकी, ईस्वर महाविस्नु उनमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४६ ॥

सदरतुल मुंतहा अरस अजीम, नूर जमाल सूरत सुभान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ४७ ॥

नूर पार नूर तजल्ला, पोहोंचे रसूल रुहअल्ला हजूर ।
ए सब इमाम खोलसी, जो दोनों किया मजकूर ॥ ४८ ॥

क्यों नूर क्यों नूर तजल्ला, क्यों कर वतन खसम ।
खोलसी माएने इमाम, खातिर मोमिनों हम ॥ ४९ ॥

चौदे तबक की बात जो, सो तो केहेसी सकल जहान ।
पर लैलतकदर मेंहेदी बिना, क्यों खुले माएने कुरान ॥ ५० ॥

ए जो पूछे माएने, खोल दिए कदी सोए ।
तो इनसे चौदे तबकमें, क्यों कर कजा जो होए ॥ ५१ ॥

लुगे लुगे के माएने, जो कोई निकसे बोल ।
ए कजा तब होवही, जब दीजे माएने सब खोल ॥ ५२ ॥

सदरतुल मुंतहा - अक्षरधाम,
नूर - अक्षरब्रह्म, नूरजमाल - अक्षरातीत,

अरस अजीम - परमधाम,
चौदे तबक - चौद लोक

Nijanand App

ए नूर के पार के माएने, सो सारों को अगम ।
एक लुगा बिना इमाम, निकसे ना मुख दम ॥ ५३ ॥

जब माएने खुले मुसाफ के, बैठे इमाम जाहेर होए ।
तब ए दुनी जुदी जुदी, क्यों कर रेहेसी कोए ॥ ५४ ॥

सो इमाम जाहेर हुए, ले माएने कुरान ।
नूर सबों में पसर्‌या, एक दीन हुई सब जहान ॥ ५५ ॥

ए तो करी इसारत, पर बोहोत बड़ी है बात ।
नूर बड़ो इमाम को, सो या मुख कह्यो न जात ॥ ५६ ॥

ए नूर खुद वतनी, सो क्यों कर सह्यो जाए ।
नूर मत आगे तो करी, जाने जिन कोई गोते खाए ॥ ५७ ॥

इमाम आए तब जानिए, जब खुले माएने कुरान ।
तब जानों आखिर हुई, सुख दिया सब जहान ॥ ५८ ॥

आद करके अबलों, परदा न खोल्या किन ।
सो बरकत मेहेदी महंमद, खुल जासी सब जन ॥ ५९ ॥

लोक जाने ज्यों और है, ए भी फुरमान तिन रीत ।
पर दिल के अंधे न समझहीं, ए फुरमान सब्दातीत ॥ ६० ॥

ए कागद नहीं फरेब का, और कागद सब छल ।
अबहीं इमाम देखावहीं, रसूल किताब का बल ॥ ६१ ॥

सनंध-प्रकरण - २०

Nijanand App

|| श्री राजश्यामाजी सहाय ||

|| श्रीजी साहेबजी के फुरमाए कुरान के (हदीसोके) ज्वाब स्वाल लिखे हें ||

ऐक पूछता हें दूसरा कहता हें । अला रसूल का हुकम । असलू मुसलमों पर आय़ा हें । दीन महंमद इमांम मेहेंदी रुह अला का दोर होता हें । (मुसलिमोंका मेला होता हें ।) एक दूजे कों मिलते हें , मिलाव़ते हें ओर मिले भी हें । तहां मिनोंमिनें रसूल के फुरमाऐ की मजकूत होती हें । ऐक पूछता हें दूजा कहता हें।

भलाजी : कछू कुरांन के मांएनें कहो ।

बाबा : कुरांन के माएनें तो बिनां हिसाब हें । तुम केतेक सुनोंगे ।

भलाजी : बिनां हिसाब हें सो क्यों कर हें ? (में न सुनु सो किस वास्तें?)

बाबा : केतेक मांएनें कलांम अलाके रसूल साहेबनें जाहेर कीऐ हें, ओर केतेक मांएनें इसारतों से कहे हे, ओर केतेक अरफ कांनों सूनें पर लिख्रे नहीं । (यु बिनां हिसाब हें । अब जो पूछो सो कहों ।)

भलाजी : रसूलनें जाहेर कीऐ सो किस वास्तें ?

बाबा : जाहेर कीऐ सो दीन महंमदी । सो मुसलिम (रुहो) के वास्ते, बंदगी कराए, उमेदा लगाऐ ।

भलाजी : रसूल साहेबनें इसारतों सों कहे सो किस व़ास्तें ?

बाबा : इमांम के दोरकी जो बात हें सो पीछले दोरके आदमी सहि न सकेंगे । तिस व़ास्तें रसूलनें इसारतों से लिख्रे हें । सो बातें इमांम जाहेर करेंगें । सो इन दोर में होंव़ेंगी । ऐ जो इसारतें करीया हें, सो इस व़ास्तें ।

भलाजी : रसूलनें (हरफ) कानों सूनें ओर लिखे नहीं, सो किस वास्तें ?

बाबा : जो बातें नूर ओर नूरतजलाकी हें , मुसलिमों के व़तन के हरफ हे. सो इमांम की पेहेचांनिके व़ास्तें नही लिखे हें । सो बातें ईमांम जाहेर करेंगे ।

Nijanand App

भलाजी : ऐतो आगें पूछोंगा, पर अब ऐ कहो के, ऐ देख्राई देता हें सो क्या हे ?

बाबा : ऐ तो अला तालानें (अला रसूलनें) ख्रेल कीय़ा हें ।

भलाजी : ऐ ख्रेल ख्रडा क्यों कर (रहा) हें ?

बाबा : अला रसूल के हुकम सें ख्रडा (रह्या) हें ।

भलाजी : ऐ ख्रेल पेदां क्यों कर हुआ हें ?

बाबा : नूरके कतरे सेती, ओर गफलति के बुरके सेंती पेदा हुआ हें ।

भलाजी : एन ख्रेल के दरम्यांन क्या हे ?

बाबा : इन ख्रेल के दरम्यांन रूह गफल की हें, सो गफलति लींऐ ख्रेलती हें ।

भलाजी : इन ख्रेल के दरम्यांन रुह केती विधि की हें ?

बाबा : इन ख्रेलमें तो असलू रुह ऐकई हें, सो कै विधि ख्रेलती हें । इन ख्रेलकी केती विधि पूछोगे ?

भलाजी : रुहकी पहेचांन होवे तिन विधि कहो ।

बाबा : अला रसूलके हुकम सें नूरका कतरा चूआ, सो ऐक रूह नूरीओंकी हें । ऐ जो फिरस्तें हें, इन नूरी रुह सेंती आदमका रूह पेदां हुआ । इन आदमकी लार हेवांन रूह ओर हर चीज पेदां हुआ । य्यों तीन रूहें हें ।

भलाजी : सो तीन रुह कोन कोन हे ?

बाबा : ऐक रूह तो फिरस्तोंका कहा हें, ऐ जो नूरी हें । ओर दूजा रूह आदमका कहा हे, ऐ जो ख्रेल में ख्रेलता हे । ओर तीसरा रूह हेंवान का हें, ऐ जो देख्रनें का हें, ओर जिनसि सब ।

(भलाजी) : कहोजी । ऐक रूह तो तुम आदमका ख्रेलमें कह्या । इनमें तो जातें जुदीय़ां हे । भेख्र भाख्रा मेहेजब, ऐ सब जुदे जुदे देख्रांइ देते हे । (तो एक रुह सो क्यों कर कह्या ?)

बाबा : इनका जवाब सुनों । ऐ जातें, भेख्र, मेहेजब, जुदीय़ा बोलीयां सब ख्रेलकी हें । ऐ (वजुदे) जुदे जुदे होए ख्रेंचा ख्रेंच न करें तो ख्रेल सो भावे नहीं । अब तुम ख्रेलके भेख्रभाख्रा की नजर

Nijanand App

छोडिकर रुह की तरफ देखो । इन खेल की नजरयों रूहकी पेहेचांनि न होवे । असलू नजर जो मुसलिमकी हें, तिन विधि देखो, ज्यों सब पेहेचांनि होवे ।

भलाजी : खेलके बाहिर उपर तलें क्या हें ?

बाबा : इन खेलके ग्रद (गिरद) उपर तलें गफलतिका बुरका हें । (ओर अंदरभी गफलत हें ।)

(भलाजी) : कहोजी, गफलतिका बुरका अंदरभी कहा, ग्रद (गिरद) भी कहा, सो क्यों कर हें ?

बाबा : ऐ जो नूरका कतरा कह्या, गफलतिका बुरका तिन परहें । (सो उन कतरे का रुह, गफलत लीऐ सबों में खेलता हें ।) तिन वास्तें गफलति अंदरभी हें, ओर बाहेरभी हें ।

(भलाजी) : कहोजी, गफलति सो क्या हें ?

बाबा : गफलति सो नींद की न्यांति है ।

भलाजी : गफल की नींद किसके तांई हें ?

बाबा : सो गफलति की नींद नूरके कतरे पर हें । य्यों रूह, हरि (हरेक) चीज ख्वाब में खेलती हें । अब इन नूरके कतरेका, इन जिमीमें, ऐसा कोई ओर निमूंना होवे तो कहों । तिस वास्ते ख्वाब की न्यांति कह्या हें ।

(भलाजी) : कहोजी, ऐ खेल रहेगा के, फनां हो जाएगा ?

बाबा : ऐ खेल गफलतिका हें, तिस वास्ते फना हो जाएगा ।

(भलाजी) : कहोजी, ऐ खेल फनां क्यों कर होएगा ?

बाबा : ऐ फनां य्यों होएगा के, असराफील इमांम के नूर के सूर बजावेगा । तिसके अवाज सें, चौदे तबक उडेंगे ।

भलाजी : ऐ खेल किस वास्तें पेदां कीया हें ?

बाबा : ऐ खेल मुसलिमों (रुहों) के देखनें के वास्ते पेदां कीया हें, जो रुह साहेद कीऐ हें ।

भलाजी : सो मुसलिम (रुहें) कहा हें ? क्या खेलमें नही हें ?

बाबा : सो मुसलिम खेलमें आऐ हें । कोई जाहेर हुऐ हें । (कोई नही हुए ।) इमांम जाहेर हुऐ सब जाहेर होंएगे ।

Nijanand App

भलाजी : सो मुसलिम कहासें आऐ हें ? ओर (ऐ) रूह कोन हें ?

बाबा : सो मुसलिम अरस सेतीं आऐ हें । ऐ जो तीन रूह कहे हें, तिन सेतीं जुदे हे ।

भलाजी : सो रुह जुदे, सो क्यो कर हें ? किन ठोरके हें ?

बाबा : सो रूह असलू अरस के हें । ऐ (जो तीन रुहे कही तिन से जुदे केहे ।) जो लेल तुल कदरिमें उतरे हें ।

भलाजी : असलू मुसलिम हें, तिनका भेख्र क्यों कर हें ?

बाबा : गफलति के ख्रेल के व़ास्तें, कछू ऐ भी (ख्रेल की नजरों) ख्रेंचानी हें, पर आख्रर इमांम जाहेर होए, गफलतिका परदा उडेगा । तब भेख्रकी ख्रेंच दूरि होएगी ।

भलाजी : मुसलिमों का भेख्र क्या काफरों सेतीं जुदा न रहेगा ?

बाबा : भेख्र जो हें सो सारे झूंठ हें । ख्रेल की नजर के ऊपले लेव़ास हें, ओर सांची पेहेचांनि सो रूहकी हे ।

भलाजी : रूह की पेहेंचांनि तो सांची हे, पर कछू ऊपर की पेहेचांनि भेख्र की भी रहेगी के न रहेगी ?

बाबा : तुम बेर बेर भेख्र क्या पूछते हो ? सो य्यों देख्रो बताऊ । इमांम का दोर जब जाहेर होएगा, तब काफर सब दोजक की आग में जलकर साफ होंएगे । तब सब कलमां कहेंगे । मुसलमांन होंएगे । मुसलिम का भेख्र धरेंगे । तो क्या जो रूह अरस के हे, मुसलिम हे, जिन ख्रातर ख्रेल कीया हें, क्या तिन जेसे होएगे ? तिस व़ास्ते भेख्र जो हे सो सारे झूंठ हें, तकलीद हे । ख्रेल की नजर के ऊपले लेव़ास हें । जो ख्रेल की रूह हें, तिनकी नजर भेख्र पर हे । जो अरसके हें, तिनकी नजरि अरस पर हे ओर रूह पर हें । अला रसूल पर हें । भेख्रो पर नही हे ।

भलाजी : बोलीयां हे सो क्यों कर हे ?

बाबा : बोली हे सो बडी हे, सो मुसलिम की आरबी हे । जिन बोलीमें कलांम अला हे ओर कलमां रसूलका हे ।

भलाजी : ओर बोलीयां क्यो कर हे ?

Nijanand App

बाबा : बोलीओं का तुम क्या पूछते हो ? बोलीया भी भेख़की न्यांति हें । सब झूंठींयां हें । आरबी बोली बडी तो कही, जो इनमें कलांम अला हें । ओर रसूल के कलमे सें (सो कलांम अला ओर कलमें की बुजरकी वास्ते), पर कदीं आरबी बोली मिनें रसूल का फुरमाया छोडकर, ओर बाते करे, तो क्या सो ख़ा होएगी ? ओर कदी ओर बोलीवालें (कलांम अला ख़ुदा की) रसूल के फुरमाऐ की बाते करें, करेंगे, क्या सो ख़ा नहीं ? तिस वास्तें बोली सोई बडी, जिनमें अला रसूल के फुरमाऐकी बातें होंए ।

भलाजी : कछू मसलिम की पेहेचांनि में तफावत होएगी ?

बाबा : मुसलिम ऐसी ख़ोज हें, बडी मति हें , सो पूछो जिनसें मकसूद होए । फेरफेर भेख़की बुत की क्या पूछते हो ?

(भलाजी) : अजी जब में ओर बात पूछोगा, तिन बीच भेख़ की बुत की न पूछोंगा ओर नां कछू तुम कहोगे, पर जिन किसी मुसलिम कों धोख़ा रहे । सो तिस वास्ते ऐक (बेर) सूरति की पेहेचांनि भी कहो । कछू तफावत होएगी के नहीं ?

बाबा : तुम भेख़ों की तफावत पूछते हो, ऐ तो सब झूंठ हें । अब ख्यों देख़ो के ऐ ख़्वाब ख़ेल में, ऐ जो ख़ाकी बुत हें, तिनमें कोई सूरति जो रूओं की हुंईयां हें । कोई सूरति मरदों की हुंईयां देख़ते हो । तो क्या इनको मरद कहोंगे ? मरद तो ऐक सांचा सबों का सो हें ओर भेख़ बुत भाख़ा जातें, ऐ सब ख़ेल के करि देख़ो । ऐ ख़ेलकी नजरि छोडिकर, नजरि नूरतजलाकी (कर) देख़ो । (अपना रुह सांचा अरसका कर देख़ो ।) ऐ बातें तो अला रसूल मुसलिमों कों जाहेर कहीं हें, तो क्या फेरि फेरि पूछते हो ? जो भेख़ भाख़ा रसूले तुम्हारे तांई बताई हें, तिन भेख़ कों, तिन भाख़ा कों, तिन सुरति कों, बरकति महंमद दीनकी, आलम चौदे तबक सेजदा करेंगे । पर सांची पेहेचांनि सो रुह की हें ।

Nijanand App

भलाजी : कछू मुसलिम रुह की भी पेहेचांनि कहोगे ?

बाबा : मुसलिम रुहोंकी पेहेचांनी कहों सो सुनों। अब असलू मुसलिम मिनें, ऐ निसांनीं हे – आकीन, इसक, जोस, बंदगी, ख्रोज महेरबांनगी, दिल साफ, अला स्सूल के हुकम पर चलनां, ऐ निसांन असलू रुहों के हें।

भलाजी : ऐ निसांन असलू मुसलिम में, कम-जादा देख्रांई देते हें सो क्या हें ?

बाबा : ऐ निसांन असलू मुसलिम में कहें, सो कम-जादा ख्रेलल गफलत के वास्तें कम-जादा देख्राई देते हें।

(भलाजी) : (ऐ निसांन मुसलिम के कहे।) सो गफलति में क्यों कर दबाऐ हें ? ऐ गफलति सेतीं किसी दिन जोरा करकें, जाहेर भी देख्राई देएगे ?

बाबा : ऐ सुनों नींके कर। ऐ जो ख्रेल गफलति का कीया हें, इनमें जेते रुहें ख्रेलते हें, तिनमें इनों किसूकों ऐती गमि नही हे, जो हम कोन हें ? गफलति सो क्या हें ? ख्रसम सो कहां हें ? आऐ हें कहां सेतीं ? ऐ देख्रते हें सो क्या हें ? भिस्त सो कहां हें ? अला स्सूल के वतन तोडी, नजरि किसूकी नहीं पोहोंचती हें। सब इन गफलति में ख्रेलते हें। आडा दख्रजा ढांपा हें। मुसलिम भी इनोमें आऐ हें। कलांम अला भी इनोमें आऐ हें। सो राह स्सूलें बताई हें, तिनि उंमेद में लगे। पर ऐती गमि किसूकों नही, जो ख्रेल सो क्या हें ? इनका दख्रजा कहां हें ? इनका कुलफ सो कहां हें ? ओर कीली कहां हें ? ऐ ख्रबर किसूकों नहीं।

भलाजी : ऐ ख्रेल काहेका हें ? ओर दख्रजा सो कहां हें ? (ओर इनका कुलफ सो कहां हें ?) ओर कीली सो कहां हें ?

बाबा : ऐ ख्रेल तो तुमकों (पेहले) कहा हें, जो नींद गफलति का हें। इनका दख्रजा, ऐक कलमां हें। इनका कुलफ सो कलाम अला हें। ओर इनकी कीली सो, इमांम मेहेदी रुह अला का दिल हें। सो इमांम जाहेर हुऐ, कलांम अलाके मांएने ख्रुलेंगे।

Nijanand App

तब कीली, कुलफ, दरव़जा, (ख़ेल, ख़ेल के) मुसलिम, रसूल, इमांम, जबराईल, असराफील जाहेर होंएगे। असलू मुसलिम के निसांन जो तुम पुछो, सो सब तब जोरा करेंगे। नूरकी सूरति हो रहेंगे। ऐ निसांन असलू रुहों के हें, सो उस बख़त देख़ोगे।

भलाजी : (ईन) ख़ेलमें रसूल फुरमांन किस व़ास्तें ल्याऐ ?

बाबा : फुरमांन मुसलिमों के व़ास्तें ल्याऐ।

भलाजी : तुमनें कहा, जो रसूल कलांम अला मुसलिमों के व़ास्तें ल्याऐ, ओर मुसलिम इमांम के साथ जाहेर होंएगे, तो भलाजी, एतनां तफाव़त भय़ा सो क्या ?

बाबा : ऐ आगें-पीछें तफाव़त इहांई देख़ाई देता हें। अरस में ऐ नजरि नहीं। ऐ ख़ेल पेदां कीया, रसूल आऐ, कलांम अला आऐ, मुसलिम आऐ, इमांम जाहेर होंएगे। मुसलिमोंको ख़ेल देख़ाए, अरस पोहोंचेंगे। एतने बीच (बरस) अरसकी पाउ साएत भी न होएगी। ऐ जो तुम तफाव़त पूछी सो ख़ेलकी नजर की हें।

भलाजी : अरसकी पाउ साएतमें ऐती तफावत देख़लाई देती हें सो क्या ?

बाबा : अरसकी पाउ साएतमें कै इंड आलम पेदां फनां हो जाते हें, ओर इन इंडोंकी दुनीय़ां को कै मुदत हो देख़ांइ देती हें। ऐ फेरस्तोंके ख़ेल के जोरें सो ऐ ख़ेलते हें।

भलाजी : जिननें रसूलका फुरमाय़ा हक करि मांन्यां सो कोंन ? (ओर जिनोनें न मांन्यां सो कोंन ?)

(बाबा) : जिननें मांन्यां सो आकीनव़ाले मुसलिम। जिननें न मांन्यां सो काफर, जिनकों आकीन नहीं।

भलाजी : ऐ ख़ेल तो सब कुफरका था, इनों में ऐकोनें मांन्यां सो किस व़ास्तें ?

बाबा : मांन्यां सो आकीनव़ाले मुसलिमों रुहों व़ास्तें।

भलाजी : काफरों न मांन्यां सो किस व़ास्तें ?

बाबा : सो ख़ेलके रुहों व़ास्तें।

भलाजी : ऐ रसूलका फुरमाय़ा किन विध मांनि लीजे ?

Nijanand App

बाबा : रसूलका फुरमाया आकीन से मांनि लीजै।

भलाजी : आकीन सो क्यों कर पेहेंचांनीऐं ?

बाबा : आकीनकी पेहेचांनि मुसलिम, ओर मुसलिम सोई जिनमें आकीन।

भलाजी : आकीन की रहनी मुसलिम, सो क्यों कर पेहेंचांनीऐं ?

बाबा : रसुल के फुरमाऐ में कहूं सक न आवे। आकीनकी रहनी मुसलिम य्यों पेहेंचानीऐ।

भलाजी : काजी सो किसे कहीऐ ?

बाबा : काजी सो जो चौदे तबक रुह सबोंकी कजा करे। काजी नांम हें सो बडा हें। काजी नांम हें सो महेरबानका हें। काजी उसकों कहीऐ, जो कजा करे ओर गफलतका परदा दूरि करे। सबकों कांएम सुख देवे। काजी तिसके तांई कहीऐ।

(भलाजी) : कहोजी, इस खेलमें अदलि हुकम कजा (काजी) का क्यों कर फुरमाया हें ?

बाबा : ईस खेलमें अदलि हुकम कजा (काजी) का य्यों फुरमाया हें। काजी (सो जो) कुरांन के मांएने देखे, अपनां दिल साफ करे, अला रसूलका हुकम हक करे, ओर आप कजाके हुकम सें डरकें हुकम पर चले, ओरों कों हुकम पर चलावे। (ओर हुकम हाकिम को बतावे।) अदलि हुकम काजी तिनको कहीऐ।

भलाजी : हाकिम किसके तांई कहीऐ ?

बाबा : हाकिम सोई, जिनका हुकम रसूल। (जिनके हुकमें एह इंड आलम खडा रह्या हें।) जिनके हुकमें कै इंड आलम पेदां फनां हो जाते हें। जिनके हुकमें इन खेलमें, कै खेल खेलाऐ हें। जिनके हुकमें मुसलिम खेल देखनें आऐ हें। जिनके हुकमें इन झूंठे खेलको कांएम करेंगे। हकिम तिसके तांई कहीऐ, जिनके एतने हुकम चलते हें।

(भलाजी) : कहोजी, इन खेलमें अदलि हुकम क्यों कर फुरमाया हें ?

बाबा : जो अदलि (अला) रसूलका कलमां हक कर लेवे, रसूलका

Nishant App

हुकम पेहेंचाने, क्यांमति के हुकम से डरे, आप हुकम पर चले, ओरोंको हुकम पर चलावे । हाकेम तिसके तांई कहीऐ. जो सरा पर चलावे ।

(भलाजी) : कहोजी, इसक सो क्या ?

बाबा : इसक (जो) नांम हे सो इस ठोरका नहीं । ऐ नांम जो हे सो असलू अरसके हें । (ओर इस जीमीं पर इसक ल्यावेगा, सो भी अरस सेती ल्यावेगा ।)

(भलाजी) : कहोजी, इसक नांम अरस में सो क्यों कर हें ?

बाबा : कलांम अलामें अलाहका नांम आसिक कर लिख्या हें । रसूलको मासूक महबूब कर लिख्या हें । ऐ नाम एहा के नहीं, ऐ नाम असलू अरसके हें, ओर इस जिमीं पर रुहें इसक लेवेंगी, सो भी अरस सेती लावेगी । तिस वास्तें ऐ नांम असलू हें । अब जाहेर होंवेगे ।

(भलाजी) : कहोजी, बंदगी सो क्या ?

बाबा : बंदगी सो इस ठोरकी हें । अला रसुल के उंमेदगार हें । कमी होने न देवे । सिर पर फरज हें, सो हुकम सिर पर लेनां ।

(भलाजी) : कहोजी, सरे मांफक क्यों कर चलनां ?

बाबा : सरे की बात तो बोहोत हें । जो पूछो सो कहो ।

(भलाजी) : कहोजी, कलमें का मांएनां क्यो कर हें ?

बाबा : कलमें का मांएनां बोहोत बडा हें । कलमे में आपु नूर सूरति रसूल हें ।

(भलाजी) : कहोजी, कलमां पेहेंचानि हक क्यों कर लेनीं ?

बाबा : जिने कलमें का मांएनां हक कीया, तिन (ख़ुदा को पेहेचानां ।) रसूल कों पेहेचानां ।

(भलाजी) : कहोजी, तुमनें कहा । जो कलमें में बोहोत मांएनें हें । तो भलाजी, कोई कलमें का मांएनां ओर भी कहोगे ?

बाबा : इन ग्रेलेमें रुह चारि विधिकी हें । तिनमें ऐक रुह सो, जो कलमां बाहिर भी कहेग ओर अंदर भी कहेंगे । ओर ऐक रुह सो, जो

Nijanand App

कलमां बाहेर कहेंगे ओर अंदर न कहेंगे। ओर ऐक रुह सो, जो कलमां बाहेर न कहेंगे ओर अंदर कहेंगे। ओर ऐक रुह सो, जो (कलमां) ना बाहेर कहेंगें, ना अंदर कहेंगे। एन चारि ताएफे की रुह को, कलमें की दोस्ती, भिस्त होएगी।

भलाजी : तीनि ताएफे (प्रकार) की (रुहकी) तो मेरी निसां हुइं। पर ऐ जो चोथी रुह कही, जिननें कलमां न बाहेर कहा, ना अंदर कह्या, तिनके तांई कलमें की दोस्ती भिस्त क्यों कर होएगी ?

बाबा : कलमें की पेहेचांनि हनोज तोडी (अब तक) हुई नहीं। अब इमांम जाहेर हुऐ, कलमें की पेहेंचांनी जाहेर होएगी। तब कलमें की दोस्ती, ऐ दोर ऐसा होएगा, के चारयो (चारेय) चीज (प्रकारकी) रुह सब पर, कलमें का नूर बरसेगा। तिन नूर सेती सब भिस्ति में जांएगे। सो कलमें की दोस्ती भिस्ती य्यों होएगी।

(भलाजी) : कहोजी, कलांम अला सो क्या ?

बाबा : कलांम अला सो, जो अलाके कलांम। अपनां आप जाहेर कीया हें।

(भलाजी) : कहोजी, अपनां आप सो क्यों जाहेर कीया हें ?

बाबा : जिनने कलांम अलाके मांएनें पाऐ, तिनकों अलाह की पेहेचांनि हुई। जब ऐ कलांम अलाके मांएने खुले, तब आलम सबको पेहेचांनि होएगी, भिस्ती होएगी। य्यों कलांम अलानें अपनां आप जाहेर कीया हें।

(भलाजी) : कहोजी, पाक सो क्या ?

बाबा : पाक सो, जिनका दिल पाक। तिनके तांई बाहेर भी छींट ना लगे।

भलाजी : ना पाक सो कया ?

बाबा : ना पाक सो काफर, जिनका दिल पाक नही। सो बाहेर भी ना पाक।

(भलाजी) : कहोजी, वजू (उजू) सो क्यों कर फुरमाया हें ?

बाबा : अपनें हाथ पाउ अंग इंद्री, या मांहे या बाहेर पाक रहे। (उज

Nijanand App

सो तिन वास्तें फुरमाई हें ।)

(भलाजी) : कहोजी, निमाज (सो) क्यों कर फुरमाई हें ?

बाबा : साफ दिल पांच बखत निमाज गुजारे, तो अरस के इसक का चाह उपजे । (निमाज तिस वास्तें फुरमाई हें ।)

(भलाजी) : कहोजी, बांग सो किस वास्तें फुरमाइ हें ?

बाबा : बांग सो बंदगीवालों को कांएम करती हें, ओर असलू मुसलिम जो कोई कुफरमें भूला होए, तिनके तांई चेतावे (चेतावती) हें । ओर काफर जो कोई के (ए) अवाज सुनेंगे, सो दोजक की आगि (आग) सेतीं बचेगा । तिस वास्तें बांग फुरमाई हें ।

(भलाजी) : कहोजी, रोजे चिले किस वास्तें फुरमाऐ हें ?

बाबा : रोजे चिले अंग की कसोटी हें । जो कोई रोजे चिले प्यार सों करे, तो तिनका दिल अला रसूल की तरफ हमेसां साफ रहे । रोजे चिले तिस वास्तें फुरमाऐ हें ।

(भलाजी) : कहोजी, सुंनति किस वास्तें फुरमाई हें ?

(बाबा) : अपनी इंद्री साफ रखे । बाहेर जिन कोई बदफेल करे ।

(भलाजी) : कहोजी, तसबी (माला) किस वास्तें फुरमाई हें ?

बाबा : आपनें खावंदकी यादिदास्ति भूले नहीं ।

भलाजी : फकीर सोफी (सूफी) किसके तांई कहीऐ ?

बाबा : फकीर सोफी सो, जो अला रसूल के कदम देखनें की फिकर करे । ओर फिकर के नजीक न जाए । (अपना दिल साफ रखे । फकीर सोफी ख्यों फुरमाया हें ।)

भलाजी : बेकेद सो किसके तांई कहे ?

बाबा : बेकेद सो ख्यों फुरमाया हें । अला रसूल के फुरमाऐ की केदमें आवे, तब खेलके केद सें छूटी जाए । बेकेद तिसके तांई कहीऐ ।

भलाजी : डर किसके तांई किस वास्तें फुरमाया हें ?

बाबा : जिन कोई भूलमें (मुजमें) खांमीं निकले, तो अला रसूल के आगें क्यांमति के दिन सिर क्यों उठाऊँगा ? डर तिस वास्ते फुरमाया हें ।

Nijanand App

भलाजी : बेडर किस वास्ते फुरमाया हें ?

बाबा : जब अला रसूल की तरफ दिल साफ हुआ, तब किसीका डर नहीं । बेडर सो य्यों फुरमाया हें ।

भलाजी : ख़ूंनी क्यों कर फुरमाया हें ?

(बाबा) : (ख़ूंनी सो, जिने उमत पर तरवार काढी । ख़ूंन में कुफर हे । ख़ुदाताला केहेता हे के, रोज क्यांमत को में, उसकी तरफ न देखुंगा ।) बाबा, जेसा करे तेसा पावे । ख़ूंन में ख़ूब रहे ।

भलाजी : मेहेरबान क्यों कर फूरमाया हे ?

बाबा : महेरबान दिल असलू मुसलिम की निसांनी हें । (जो असलू मुसलिम हें,) सो सब पर मेहेरबांन हें । कुफर पेठनें न पावे ।

भलाजी : ख़ांनां पीव़नां क्यों कर फुरमाया हें ?

बाबा : ख़ांनां पीनां ब्रिगुन (निरगुन) नांकौव़त (बेकुअत) फुरमाया हें ।

भलाजी : ब्रिगुन नांकौवत (बेकुअत) किस वास्तें फुरमाया हें ?

(बाबा) : (निरगुन बेकुअत इस वास्तें फुरमाया हें के,) अपनी अंग इंद्रीया कुफर की तरफ ख़ेंच न करें ।

भलाजी : ब्याह सो किस व़ास्तें फुरमाया हें ?

बाबा : ख़ांनां ओर कपडा ब्याहतें या ओरत छोडनेकी सरति बांधी हें ।

भलाजी : सरति किस व़ास्ते बांधी हें ?

(बाबा) : (सरति इस वास्ते बांधी हें,) के दिल दोनों का न्यारा रहें, गफलति में बंधाए नही ।

भलाजी : पकडनां सो कया ?

बाबा : पकडनां सो अला रसूल कदमों का इसक ।

भलाजी : छोडनां सो क्या ?

बाबा : छोडनां सो जो बदफेलका कांम, जिन में कुफर होए ।

भलाजी : कांनोसें क्या सुननां ?

बाबा : कानों सुननी सो रसूल की बातें । नूर ओर नूर तजलाकी ख़ोज, जिन सेती कुफर दुरि होवे ।

भलाजी : न सुननां सो क्या ?

बाबा : न सुननां सो कुफरकी बातें, जिन सेती कुफर होवे । (जिन

Nijanand App

सेती दिलमें कुफर पेदा होवे ।)

भलाजी : सांच सो क्या ?

बाबा : सांच सो अला रसूल, ओर अला के मुसलिम, जो दीन महंमद मेहेदीके (पर) कांएम हें ।

भलाजी : झूंठ सो क्या ?

बाबा : झूंठ सो कुफरका खेल । (ऐ जो देखते हो ।)

(भलाजी) : कहोजी, करामांति सो क्या ?

(बाबा) : (करामांति सो) झूंठका झूंठ हें ।

(भलाजी) : कहोजी, करामांति सो झूंठ का झूंठ क्यों कर हें ?

बाबा : बडी करामांति सो ऐ देखो । ए जो चौदे तबक अला रसूलें, मुसलिमों को देखाऐ हें । तिनका नांम झूंठ गफलति का खेल, आखर फनां होएगा, तो ए जो (करामांति के) गफलति के बुत, सो करामांति कर देखावते हें । तिस वास्ते इसका नांम झूंठ का झूंठ कहीऐ । इनमें कुफर हें ।

(भलाजी) : कहोजी, सुख सो क्या ? किसे कहीऐ ?

बाबा : अला रसूल यादि आवे, इनका नाम सुख ।

भलाजी : दुख सो क्या ? किसे कहीऐ ?

बाबा : अला रसूल यादि न आवे, भूल जांए तिनका नाम दुख ।

भलाजी : हें सो क्या ?

बाबा : हें सो महंमदका दीन, जो कांएम हें कदमों ।

भलाजी : नांही सो क्या ?

बाबा : नांही सो (कुफर) गफलतिका खेल, जो ऐते दिन पेहेले गफलतमें गले ।

भलाजी : अब थें आगें सो क्यों कर ?

(बाबा) : अब थें आगें सब कांएम होएगे । बरकति महंमद दीनकी ।

भलाजी : ऐलम सो किससें कहीऐ ?

बाबा : इलम अमल सोई, रसूलका फुरमाया साबित रखे । ओर जो साबित न रखे, तिसके तांई कुफरका ग्यांन कहीऐ ।

Nijanand App

भलाजी : गांवना बजावनां सो क्या ?

बाबा : जिन गांवनें बजांवनें सेतीं, अला रसूलकी तरफ रोसनाई उपजे सो ख़ा हे। जिन सेतीं दिल कुफरकी तरफ खेंचा जाए, सो ख़ा नहीं।

(भलाजी) : कहोजी, केफ अमल सो क्या ?

बाबा : जिन सेती मस्ती दिलकों फेरे, अंदर ओर बाहेर, सो ख़ा नहीं। तिनमें कुफर हें।

भलाजी : हक सो क्या ?

बाबा : हक सोई जिननें कलमां रसूल का हक कीया, ओर रसूल के फुरमाऐ पर हक चला।

भलाजी : हरांम सो क्या ?

बाबा : हरांम सो जो रसूलका फुरमाया छोडकें, ओर बातों में लगा।

भलाजी : दोस्त सो किसके तांई कहीऐ ?

बाबा : दोस्त सो जो अला रसूलकी तरफ खेंचे।

भलाजी : दुसमन किसके तांई कहीऐ ?

बाबा : जो अला रसूलकी तरफ हरकति करे, दुसमन तिसके तांई कहीऐ।

भलाजी : सारे (सरे) बराबर सो क्यों कर ?

बाबा : ऐ ख्रेल ख्रसंमका कर देख्रे। इनमें किसीके तांई दुख्रावे नहीं।

भलाजी : जुदे सो क्यों कर देख्रनां ?

बाबा : इमांम महंमद मेहेदी (रुहअला) मुसलिम। इन ख्रेल सेतीं जुदे कर देख्रनां।

(भलाजी) : (कहोजी, भला सो क्या ?)

(बाबा) : (भला सोई जिनके तांई, अला रसुल के कदमों इसक लगा।)

भलाजी : बुरी सो क्या ?

बाबा : जो अला रसूलकी बंदगी छोडकर गफलत में गले सो बुरी।

(भलाजी) : कहोजी, नफा सो क्या ?

बाबा : ख्रेलमें आऐ, जिनकों रसूल के फुरमाऐ पर आकींन आया,

Nijanand App

सोई नफा ।

भलाजी : नुकसांन सो क्या ?

बाबा : जेतनां रसूल के फुरमाऐ पर न चला, तितनां नुकसांन ।

भलाजी : नजीक सो क्या ?

बाबा : नजीक सो अला रसूल ओर अरस ।

भलाजी : दूर सो क्या ?

बाबा : दूर सो गफलतिका ख्रेल ।

भलाजी : अला रसूल अरस नजीक सो क्यों कर ? ओर गफलतिका ख्रेल दूर सो क्यों कर ?

बाबा : ऐ जो तुम मुसलिम हो, सो ख्रेल अपने अरसमें बेठें देखते हो । तिस वास्ते अला रसूल अरस नजीक हे । ओर गफलतिका ख्रेल नजीक देखते हो, सो फिरस्तों के ख्रेल के जोरे सेंती । ना तो ख्रेल तो कछुऐ नहीं । दूरि भी तो कहीऐ, जो कछू होए । पर कहना क्या ? तिस वास्ते दूरि कहीऐ ।

भलाजी : दांनां सो किसके तांई कहीऐ ?

बाबा : जो अला रसूल के कदम (कलांम) पेहेचांने, अपनी रूह पेहेचांने, ख्रसंम के कदमोंसे इसक लगावे, दुनीयां की तरफ से देवांना होए, तिसके तांई दांना (दांनांई) कहीऐ ।

भलाजी : देवांनां किसके तांई कहीऐ ?

बाबा : जो अला रसूलका फुरमाया सुनके, फेरि गफलत में पडे, ख्रेलकी तरफ स्यांनां हुआ, तिसके तांई देवांनां कहीऐ ।

भलाजी : जिनने रसूल के हरफ सुने, सो गफलति म क्यों कर पडता हें ?

बाबा : गफलति की नींद अंदर हें, तिस वास्ते (फेर फेर) गफलत में पडता हे ।

भलाजी : गफलति की नींद अंदर क्यों (कर) पडी हे ?

बाबा : ऐ ख्रेल जिन सेंती उपजा हें, गफलति का बुरका तिन पर हें ।

भलाजी : जिन सेंती ख्रेल उपजा सो कोंन ?

बाबा : सो नूरका कतरा, अजाजील फिरस्ता । गफलतका बुरका तिन

Nijanand App

पर हें ।

भलाजी : जो बुरका अजाजील पर हें, तो ओरों कों क्या लगे ?

बाबा : ऐ कुफर सारे अजाजील के बुरके में हें । इन सबों में दम अजाजीलका ख़ेलता हें । ऐ जो फिरस्ते बिनां हिसाब उपजे हें, तिन सबों में दम अजाजीलकी हें ।

(भलाजी) : कहोजी, मुसलिम रुह तो (तुम कहेते हो जो) न्यारे हें । ख़ेल देख़नेवाले हें, तो मुसलिम कों गफलति क्यों कर लगी हें ?

बाबा : मुसलिमों पर गफलतकी दो छाया पडी हें, पर असलू वास्तें आकीन हें ।

(भलाजी) : कहोजी, गफलतकी दो छाया पडी सो कोंन सी ?

बाबा : अला रसूल के हुकम सेतीं, मुसलिम ख़ेल देख़नें आऐ हें । (सो आप पर बुरका डार आऐ हें ।) ओर दूजी छाया ख़ेलकी पडी हें ।

भलाजी : तुमनें ऐक बुरका (ख़ेलका) कह्या, दूजा बुरका आप पर डारा हें, सो (बुरका)क्यो कर डारा हें ?

बाबा : सो (बुरका) अला रसुल के हुकमें डारा हें । बुरके बिनां ख़ेल देख़ा नहीं जाता । सो ख़ेल देख़नें के वास्तें डारा हें ।

भलाजी : सो बुरका क्यों कर डारा हें ?

बाबा : ऐ जो स्वाल हें, सो नूर तजलाका हें । सो इमांम जाहेर होए कहेंगे । ऐ जो बडी बातां हें, सो अजूं इमांम जाहेर हुऐ नहीं, तब तांई आदमी सहिं न सके । रसूले इसारतां कही हें, सो इस वास्तें । (जब तोडी कलांम अला के मांएने जाहेर नही हुऐ, तब तोडी सहि न जाऐ ।)

भलाजी : इस (इन)रुह की पेदाएस, ओर मोति (मोत) क्यों कर हें ?

बाबा : ख़ेल कें रुह का पेड सो नूर का कतरा हें, जहां अजाजील फिरस्ता हें । गफलतिका बुरका तिन पर हें । सो गफलति नींदकी न्यांति हें । सो नींदके दरम्यांन, ख़्वाबकी न्यांति रुह आवती हें ओर जाती हें । सो पेदासि ओर मोति (मोत) ख़्यों देख़ाई देती हें, दम आया ओर गया ।

Nijanand App

भलाजी : मुसलिम रुहोंकी पेदाएस, ओर मोति देख्रांई देती हें सो क्या ? क्यों कर हें ?

बाबा : मुसलिम रूह कछू इन ख्रेलमें के नहीं । ऐतो असलू अरस के हें । सो क्यांमति में उठि ख्रडे होंएगे । ख्रेलकी नजरयों पेदासि ओर मोति देख्राई देती हें ।

भलाजी : क्यांमति में क्या ओर रूह न उठेंगे ?

बाबा : अब तोडी (अब तक) जो काफरों के रूह की पेदासि ओर मोति देख्री, सो सब ख्वाब की न्यांति हें । ओर अब इमांम जाहेर हुऐ, मुसलिमोंका मेला जाहेर होए । तहा इमांम, रसूल, मुसलिम, भिस्त, नूर, नूर तजला, ओर भी ख्रेलमें पेगंमर, फिरस्ते, ख्रेल सारेकी पेहेचांनि होंएगी । इमांम का दोर ऐसा होएगा, के इन दोरमें जो रूह आय़ा सो सारे क्यांमति में उठेंगे, उठ ख्रडे होऐंगे ।

(भलाजी) : कहोजी, इमांम के दोरमें दुनीयां का हाल केसा होंएगा ?

बाबा : (इन दोर के पीछले दिन जो आख्रर के गऐ ।) इनहो के पीछले दिन गऐ, सो तो बोहोत बुरे (दिन) थे । इन दिनों में कछू दुनीय़ांकां हाल कछू रह्या नहीं । गफलति के ख्रेलमें, दजालनें बोहोत जोरा कीय़ा । अला रसूल की तरफ से (ख्रेंचके) दोजक की तरफ घसीटें । ऐ दजाल कुता ऐसा हें, जिनके बख्रत में साबित कोईक रह्या होएगा । इन (दजाल)दोजक के कुतेनें ऐसा दिल फिराय़ा हें, जो दोस्त कों दुसमन कर देख्रते हें । (ओर दुसमन को दोस्त कर देख्रते हें ।) ऐ जो गफलत, ऐही सूरति दजालकी हें । इन दजालने हथीय़ार सबों के छीनि लीऐ हें । तो भी दजालकों कोई देख्रता नहीं ।

(भलाजी) : कहोजी, दजालनें हथीय़ार कोंन कोंनसे छींनि लीऐ हे ?

बाबा : आकीन, इसक, ख्रोज, बंदगी, जोस, (मेहेरबांनगी), मेहेर, दिल साफ, रसूल के फुरमाऐ पर हक चलनां, ऐ हथीय़ार दजालने छीनि लीऐ हें । इन गफलतिने बोहोत हेरांन कीऐ हे । इन गफलत के लीऐं, फंद (हेरांनगति) कोई देख्रता नहीं । ऐ हेरांनगती बख्रत, कोई कोई बुजरकों की नजरि आय़ा हे ।

Nijanand App

तिनोंनें ऐ बख्रत नहीं चाह्या हे ।

भलाजी : अब इमांम के दोरमें, दुनीयांका केसा हाल होएगा ?

बाबा : ऐ दोर ऐसा होएगा, (के) जिन दोरके तांई ओलीऐ, अंबीऐ, पेंगंमर, जो बडे बडे बुजरक थे, तिनोंने ऐ दोर चाह्या हें । जो इस दोरमें किसही खेस रसूलकी उंमति में, दाखिल होंनें पांवे, तो बोहोत भला हे । इन इमांम के दोरमें, ओर मेहेजब सारे उडि जांएगे । ऐक महंमदका दीन रहेगा ।

भलाजी : इमांम के दोरकी तो तुम बोहोत तारीफ करी, सो दोजक कब होएगी ?

बाबा : दोजक इसही दोरमें होएगी ।

भलाजी : दोजक इसही दोरमें कहते हो, सो क्यों कर ?

बाबा : जब इमांम जाहेर होएगे, तब कलांम अलाके मांएने खुलेंगे । तिन सेंती इमांम, रसूल पेगंमर, फिरस्ते, (खेल देखनेवाले) मुसलिम, ओर मुतकें, भिस्त, नूर, नूरतजला सब जाहेर होएगे । तिस बख्रत जो रूह कुफरका हे, सो देखिकरि पछितांएगे । तिनकों जिमीं ओर आसमांन, अंदर-बाहेर सब आग होए लगेगी, के ऐ आग केसी (ऐसी) होएगी, के ओर आग सब सही जाएगी, पर इस बख्रतकी आग सही न जाएगी । इमांम किसीकों दुख्र न देइगें, पर अपनी अपनी तकसीर, सबोंकों जलांवेंगे । तब कलमां हक कर रसूलके कदमों आंवेंगे । सो कुफरों को दोजक य्यों होएगी ।

भलाजी : कछू मुसलिमों को दोजक की आंच आवेगी के न आवेगी ?

बाबा : मुसलिमों को कलमां आंच आवने न देएगा । पर एतनी दिलमें सोच रहेगी, के हम भूले । अलाह के कलांम रसूल हमारे वास्ते ल्याए थे, पर हमकों पेहेचांनि न हुई । (ऐसी बस्त) इस वास्ते हमारे पास थी, पर हम जांनी नही । हाए हाए ऐसी हम क्यों करी ? ऐती दिलमें सोच रहेगी ।

भलाजी : भिस्तिमें रूहे क्यों कर उठेगी ?

बाबा : जब इमांम का दोर हुआ, तब इमांम मेहेंदी (रुहअला) कलांम

Nijanand App

अलाके मांएने ख्रोलेंगे। तब पीछले दोरका कोई हरफ न रहेगा। जेता कोई बुनी आदम, तिनका दिल ख्यों गफलतकों ख्रेंचता हे (था)। सो तिनका दिल इमांम मेहेंदी रुह अला, महंमदकी तरफ ख्रेंचेगे। गफलत (के ख्रेल) की तरफ ख्रेंच किसीकी न रहेगी। बरकति कलांम अला (रुह अला), ओर कलमें का नूर (बरकत कलमे रसूल के), सब चौदे तबक पर बरसेगा। ओर मुसलिमों कों रसूले उमेद लगाऐ थे, तिन सबोंकी उमेदा पोंहोंचावेंगे। जिन काफरों को उमेदा न थी , तिनकों उमेदा लगाएके उमेदा पोंहोंचांवेगे। ओर जो हेवान बेसुधि थे, ऐ जो चारयो चीज देख्राई देत हें। इन सबों पर रुह अला की मेहेर की नजरका नूर बरसेगा। जिमीं जहांन जुमल, नूर सेतीं ओर अदल मारफति सेतीं पुर (रोसनाई) होएगी। तब असराफील फेरस्ता, ऐसा ही नूर के सूर बजावेगा। तिन सेंतीं आसमांन जिमीं, जल पहाड सब उडेंगे। फेर उसही के अवाज सेतीं, असलू नूरकी छाया, भिस्त में उठाऐ कांएम करेंगे।

भलाजी : तो क्या मुसलिम फिरस्तें, कुफर हेवान, क्या ऐकै भिती (भिस्त) में उठेंगे ?

(बाबा) : मुसलिम रुहे तो अपने अरस के हें, सो तो अपनें अरस में उठेंगे। ओर फिरस्ते रुहें हें, सो नूर में मिलेंगे। ओर जेता रुह इन दोर में आया, सो सब नूर की छाया, जो फेरस्ते (भिस्त) हें, तिन में उठ कांएम होंएगे।

भलाजी : तुमनी कह्या, जो असराफील के सूरसे, चौदे तबक उडेंगे। तब दुनीयां का, ओर मुसलिमों का क्या हाल होएगा ? कछू दहसत भी लगेगी (के ना) ?

बाबा : कछू कुफरों कों दहसति लगेगी। दहसति सोई कुफर। सो इमांम के दोरमें, मुसलिम रुहों कों क्यों कर लगेगी ?

भलाजी : मुसलिम रुहों कों न लगेगी सो क्यों कर ? ओर कुफरों कों लगेगी सो क्या ?

Nijanand App

बाबा : इमांम रसूल मुसलिमों को पेहेले अपनें अरस अजीम में उठांवेंगे, पोहोंचांवेंगे । पीछें असराफील सूर बजावेगा । तिन सूर सेतीं, जिमीं जहांन चौदे तबक उडेंगे । मुसलिमकों न लगेगी सो इस वास्तें ।

भलाजी : दुनीयां पहाड जिमीं (जहान) मिल उडेंगे, तो तुम (तुमनें) कछू दहसति कही सो क्या ? क्यों कर ? इनका क्या हाल होएगा ?

बाबा : इनका (इसकका) जोस ऐसा उठेगा, जो दहसति भी उडेगी । ऐ जो देवाला (दिवाला) धातां बातां रूह के ग्रदवाए हें, सो सब उडेंगी । रूह ठोर के ठोर रहेगी । कछू दहसति देख्रांई देएगी, पर कछू दख्रल न कर सकेगी ।

भलाजी : ऐ तो तुम मुसलिम जिहांनकी कही, पर अब अजाजील की कहो ।

बाबा : असराफील ऐक सूर बजाएकें, नूर कों चलेगा । तब बीचमें अजाजील मिलेगा । तब असराफील, फेर सूर बजावेगा । तिन सूर सेतीं अजाजील को रुहअला, इमांम मेहेदी की, ओर मुसलिम की ओर दुनीयां की, इमांम के दोरकी सब ख्रबर होएगी । तिनि ख्रबरि सेंतीं, अजाजील की गफलत उडेगी । तब आप बोहोत पछितावेगा । दरदबंद होएकें, आदम पर सेजदा करेगा । पर एसके तांई दोजक की आग ऐसी उठेगी, जिनमें रूह चलेगी । सो रूह अजाजीलकी, ओर मेकाईल (की), अजराईल (की), इसकों (असराफील) लेएकें, एक होए कतरें कों पोंहोचेंगे । तब कतरे का बुरका उडेगा । तब असराफील ओर बुरका (कतरा) , नूरकों पोंहोचेगा । तब नूरकी नजर भिस्ति पर होएगी । तब रूहे सब भिस्तमें , आप अपने ताएफें, उठके कांएम होएगे ।

(भलाजी) : कहोजी, तुम कह्या, जो असराफील नूरकों पोंहोंचेगा, तब नूरकी नजर भिस्त पर होएगी ओर रूहे सब उठ कांएम होंएगी । इन बीच तुम दोए सूर कहे, के इन दोए सूर बीच कछू तफावत

Nijanand App

होएगा के नहीं ?

बाबा : असराफीलकी नजरों तो कछू तफावत न होएगा । एक सांएत भी न होएगी, ओर दुनीयां की नजरों तो कछू (कोईक) दिन बरस आवेंगी ।

भलाजी : असराफीलकों दो सूर बजांने पडे सो क्यों कर ?

बाबा : ऐ जो चौदे तबक अजाजील के (कतरे के) बुरके में हें । ऐक सूर सेतीं, चौदे तबक की रूह की देख़ाल उडाई । ओर दूजे सूर सेतीं, चौदे तबक का बुरका उड़ाया, जो नूर के उपर (आडे) था । तब नूरकी नजर भिस्त पर होएगी । तब नूरकी नजरयों (ऐ) रूह उठकें सब काएम होएगी ।

(भलाजी) : कहोजी, तुम कह्या, जो अजाजीलका रूह दरदबंद होएके, आदम पर सेजदा करेगा, ओर दोजकी आग में जलेगा सो क्या ?

बाबा : पेहेले तो अला रसूल का हुकम हुआ । तब नूरका कतरा, बुरका समेंत पेदां हुआ । सो नूरी अजाजील कह्या । ओर तिन अजाजील सेतीं, हुकमें दो फिरस्ते हुऐ । तिनसें आदम, जुमल जिहांन पेदां हुआ । तिनमें अजाजील गफलति के तख़त बेठा । तब अजाजील कों हुकम हुआ, जो आदम पर सेजदा कर । सो अजाजील तो गफलति के तख़त बेठा था । सो गफलत तो दोजक की आंच (कुत्ता) हें । सो आदम कों अपनी पेदास जांनि के सेजदा न कीया । तब इनकों लांनति हुई । सो भी गफलत में कछू समझा नहीं । असराफील के सूर सेतीं अजाजील कों इमांम की (इमांम के दोर की) सब ख़बरि हुई । जो सेजदा (आदम) करावते थे, सो अपनें दोरकी पेहेचांनिके वास्तें, के आप आदम में आवेंगे । पर गफलत के लीऐं कछू समझा नहीं । सो सारी जब ख़बर हुई, तब दरदबंद होए आदम पर सेजदा कीया । सो इसही दरद सेतीं (दोजक की आग हुई, तिन आग सेती) परदा उडा । रूह साफ होए नूर को पोंहोचेंगी ।

Nijanand App

(भलाजी) : कहोजी, ऐसे नूरी फिरस्ते कों लांनत हुई सो क्या ?

बाबा : इन फिरस्ते की पेदास, जो आदम - इमांम रूह अला, तिनमें आवेंगे । तिस वास्ते इतना (फिरस्ते) नूरी पर न करें, तो इमांम की पेहेचांनि, आदम में मुसलिम क्यों करें ? सो पेहेचांनि के वासें नूरी फिरस्ते कों लांनत हुई ।

(भलाजी) : कहोजी, ऐसे फिरस्ते असलू केते हें ? ओर इनका नांम क्या क्या हे ?

बाबा : नूरी फिरस्ते पांच हें । तिनका नाम अजाजील, मेकाईल, अजराईल, जबराईल, असराफील, ऐ पांचो नूरी हें ।

भलाजी : इन पांचोकी पेदाएस क्यों कर हें ?

बाबा : पेहेलें तो अला रसूल के हुकम सेंतीं, नूरका कतरा चूआ । सो ऐ पेदास अजाजील की, ओर इनकी लार दो फिरस्ते - मेकाईल ओर अजराईल, ओर इन सें बिनां हिसाब फिरस्ते उपजे । ओर जबराईल तो रसूल के (जोस के) नूर सेंतीं पेदां हुआ हें । (हुकम का स्वरुप) तिनकों (अंदर) दरम्यांन का कांम था, सो कांम कर (हुकमे) अपनें ठोर पोंहोंचांवेंगे । ओर असराफील तो नूर सेतीं , आखर कों आया । इमांम के ओर रसूल के हजूर में रहेगा ।

(भलाजी) : कहोजी, नूरी तो तुम पांचो कहें, तिनमें दोए फिरस्ते अजाजील की लार कहे, सो पांचो नूरी क्यों कर हें ?

बाबा : जब खेलका हुकम हुआ, तब पेहेले अजाजील पेदां हुआ । ओर अजाजील सेतीं हुकमें दो फिरस्ते पेदां हुऐ । आदम जिमी जिहांन चौदे तबक गफलति के हुऐ, ओर बिनां हिसाब (फिरस्ते) हुऐ । तिनमें दोए फिरस्ते जो कहे, तिनमें ऐक पालता हें ओर दांना पांनी घास पोंहोंचांवता हें, ओर ऐक रूह कबज करता हें । ऐसा छलका खेल कीया । तिन छलके (खेलके) तखत अजाजील बेठा । आप नूरी हें, तिस वास्तें विचार कीया, जो (में तो) खेलका खावंद होए बेठा हों, मेरे सिर पर तो खसम हें । ऐसा

Nijanand App

जानि सरमाया । आप खेल थें छिपाया, तब खेलका बोझ मेकाईल ओर अजराईल पर आया । तब नूरकी नजर जो अजाजील पर थी, सो इन दोंनो पर हुई । तिस वास्तें (ए) भी नूरी कहे ।

(भलाजी) : कहोजी, इन पांचो का ठोर (खेलमें) कहां हें ?

बाबा : अजाजील तो सातमें आसमांन, ओर चौदे तबकों हाजर खडां हें, ओर आठमी मजल तोडी पोहोंचता हें । ओर मेकाईल छठ में आसमांन, ओर चौदे तबकों हाजर खडा हें, ओर सातमी मजल पोहोंचता हें । ओर अजराईल चोथे आसमांन, ओर जिमीं पर हें, ओर चौदे तबकों हाजर खडा हें । ओर जबराईल रसूल के संग रहता हें, अला रसूल के दरम्यांन के काम के वास्तें उतरा हें । ओर असराफील, नोंमी मजल (नूर) सेती आया, इमांम के हजूर, इमांम के नूरमें रहेगा ।

(भलाजी) : कहोजी, अलारसूल तो तुम जुदे नहीं कहते हों, तो अला रसूल के दरम्यांन (फिरस्ता आवता ओर जाता) तुम क्यों कर कह्या ? सो क्या ?

बाबा : सो तो तुमकों पेहेलें कह्या हें । जो जबराईल रसूल के जोससें (नूर सेती) पेदां हुआ हें, सो तो रसूल की साफ सूरति हें । सो सूरति दोंनो बीच ऐक होती हें ।

भलाजी : जो वली पेगंमर, ओलीऐ, अंबीऐ हुऐ, इनोकी मजल कहो ।

बाबा : ऐ तो खेलमें बिनां हिसाब हुऐ हें । तुम किसकी पूछते हों ?

भलाजी : पेहेले नबी पेगंमर की (महंमद की) कहो, जो बडा पेगंमर औवल आखर का हें ।

बाबा : इन रसूल की बात हें, सो अला के सामिल हें । जुदी नहीं कही जाती । अलाह की बाते होएगी तब रसूल की बाते होएगी ।

भलाजी : अला रसूल के सामिल हें, सो क्यों कर हें ?

बाबा : ऐ जो स्वाल तुम पूछा, सो तो नूर ओर नूरतजला के हें । सो तो इमांम की जुबांकी बाते हें । सो इमांम जाहेर हुऐ तुमकों

Nijanand App

कहेंगे ।

भलाजी : रसूल बिगर ओर पेगंमरो की कहो । बडी मजल कों कोंन पोहोंचा ?

बाबा : बडी मजलको ऐक ईसा पेगंमर पोहोंचा हें ।

भलाजी : ईसा पेगमंर बडी मजल को क्यों कर पोहोंचा ? ऐसे कहो ज्यों हमारा दिल साहिदी (ग्वाही) देवे ।

बाबा : जब इमांम जाहेर होएगे, तब पेहेले ख्रिजमत में ईसा आवेगा । ओर (पेगंमर) हें सो बिना हिसाब हें, हजूर आवेंगे । परदा चौदे तबक का उड़ेगा , पर निसबत में (कदमो में) ऐक ईसा रहेगा । ओर सारोका ख्रलीफा हें । बडी मजल को सो ख्यों पोहोंचा ।

भलाजी : अली रसूल के हजूर हें, इनकी मजल कहो ।

बाबा : अली जो था, सो रसूल के हुकम की सूरति था । अली कछू रसूल से जुदां न कह्या जाए ।

भलाजी : ओर अंबीओं की कहो ।

बाबा : ओर ओलीऐ अंबीऐ बिनां हिसाब हुऐ हें । कोई चोथी, कोई पांचमी, कोई छठमीं मजल कों, कोई काई सातमीं मजल तोडी पोहोंचा ।

भलाजी : ऐह तो मेरी निसां हुई, पर ऐ जो तुम मजलां कही सो क्यों कर हें ?

बाबा : ऐ जो चौदे तबक कहे, तिनमें सात तो तलें हें ओर सात ऊपर हें , सो तो सात मजलां । आठमीं मजल जो नूर का कतरा, जहां गफलतका बुरका हें । नोंमी मजल नूर हें । दसमी मजल नूरतजला हें ।

भलाजी : तुमनें दस मजलां कही, तिसमें तो सात मजलां ऊपरा ऊपर कही ओर जो तीन मजला कही, सो क्या इनके ऊपर हें ?

बाबा : सात तो तुम समझे । आठमी मजल नूरका कतरा हें, जहां बुरका हें ।

भलाजी : तुम नूरका कतरा आठमी मजल कहां, सो क्या इन सातों के ऊपर हें ?

Nijanand App

बाबा : (नूरका कतरा) इन सातों के ऊपर भी हें ओर तरे भी हें, ओर चौदे तबक के दरम्यांन भी हें, ओर हर चीज में हें, ओर जुदा का जुदा भी हें , ओर चौदे तबको कहा, लगता भी नही ।

भलाजी : नूरका कतरा तुमने, बाहेर भी कह्या ओर अंदर भी कह्या, ओर जुदा का जुदा भी कहा । ऐसें कहो जो हम समझे, ओर नूर ओर नूर तजला की भी कहो ।

बाबा : ऐ नूरका कतरा चूआ, सो बुरके के दरम्यांन हें । ज्यो रूहें नींदमें ख्वाब देखतीं हें, सो ख्वाब सारा नींद के, ओर रुहके दरम्यांन हें । ओर सोई (रुह) नींद लीऐ, सबके दरम्यांन (बीच) खेलती हें ओर जुदे के जुदे भी हें । इन बुरके को कोई उलंघ नहीं सकता हें । इन बुरके को उलंघे तो आगे नूर हें । सो नूर ऐसा, कें जिनकी किरनां किन पे (काहु से) न सही जांए, तो क्यों कर पोहोंचे ? ओर रसूल नूर के पार सेती, नूर तजला की ख़बर ल्याया । ओर तुमने नूर ओर नूर तजला की पुछी, सो तो इमांम के पेहेचांनि की बाते हें । सो इमांम (जाहेर हुऐ) कहेगे ।

भलाजी : ऐ बातां तुम इमांम की पेहेचांनि की कही । सो तो इमांम की पेहेचांनि क्यों कर होएगी ?

बाबा : ऐ बातां ऐ जुबां आवती नहीं । ऐ बात कहनें की जुबां ओर हें ।

भलाजी : ओर जुबां कही सो कोन कोन जबां केसी हें ?

(बाबा) : ओर जबां एस (इस) जुबांकी न्यांति नहीं चलती हें । उन जुबां की चालि ओर हें । (इन जुबांकी न्यांति नहीं आवती ।)

भलाजी : उन जुबांकी (ओर) चाल सो केसी हें ?

बाबा : उस जुबांकी चाल ऐसी हें, चौदे तबक की जुबां की चाल (को) फेर सीधी करेगी ।

भलाजी : सो जुबां केसी हें ? (ओर किसकी हें ?)

बाबा : सो जुबां इमांम मेहेदी रूह अलाकी हें ।

भलाजी : सो इमांम की जुबां क्या ऐसी हें, सो सबकी जुबां फेरेगी ?

(बाबा) : (सब जुबांनो कोन कोन फेरे ? ओर जुबांन की न्यांति चले, तो

Nijanand App

इमांम की पेहेचांनि आदममें मुसलिम क्या कर करे ?)

(भलाजी) : (इमांम की पेहेचांनि क्यां, इमांम की जुबां करेगी ?)

बाबा : ऐ बात तो मासूर हें, जो सबकी पेहेचांनि अपनी अपनी जुबां करती हें । ज्यों कलांम अलामें अलाकी पेहेचांनि हें, त्यों कलमें में रसूल की पेहेचांनि हें । त्यों इमांम की पेहेचांनि इमांम की जुबां करेगी ।

भलाजी : सो इमांम की जुबां करेगी सो कोन बांतां करेगी, जिन सेंती इमांम की पेहेचांनि होएगी ?

बाबा : सो इमांम की पेहेचांनि की जुबां बातां बिनां हिसाब हें । तुम केताक पूछोगे ?

भलाजी : तिनमें की बात ऐक तो कहो ?

बाबा : वे बातें हें, सो नूर की हें ओर नूरतजलाकी हें । ऐ बातें इमांम की जुबां कहेगी । ऐही इमांमकी पेहेचांनि ।

भलाजी : इमांम की जुबांकी बात, कोई ओर भी कहोगे ?

बाबा : ऐक हरफ कलांम अलाके, रसूलें जाहेर करे हें । ऐक हरफ जो हें सो, रसूलें इसारतों में लिख्रे हें । ओर ऐक हरफ सो, जो (गुझ के गुझ) रसूलें कानों सुनें, पर लिख्रे नहीं । ऐ तीन विधि के हरफ के जब मांएनें कहे, सो जुबां इमांम की पेहेचांन ।

भलाजी : सो इमांम अब कहां हें ?

बाबा : सो इमांम हयांई हें ।

भलाजी : जो इमांम हयांई हें, तो दुनीयां क्यों नही देख्रती हें ?

बाबा : दुनीयां ओर इमांम बीच, गफलत का परदा हें । सो क्यों कर देख्रे ?

भलाजी : ऐ परदा कब उडेगा ?

बाबा : एस परदें को इमांम की जुबां दूर करेगी ।

भलाजी : इस परदें को इमांम की जुबां दूर क्यों कर करेगी ?

बाबा : इमांम जब कलांम अला के मांएने ख्रोलेंगे, तब गफलत का परदा दूर होएगा, ओर इमांम मेहेदी रूह अलाकी पेहेचांनि

Nijanand App

होएगी ।

भलाजी : परदा उडे, इमांमकी पेहेचांनि क्यो कर होएगी ?

बाबा : ऐ जो स्वाल तुम, फेर फेर इमांम की पहचांनि के, तुम पूछते हों , सो इसी पेहेचांनि के वास्तें, रसूले हरफ (कानों) सुनें पर लिख्रे नहीं, ओर सुनकें इसारतां लिख्रें, सो भी इसी के वास्तें जाहेर न कीऐ । जो कलांम अलाके मांएनें, रूह अला आपने आप खोलेंगे । ऐही पेहेचांनि इमांम की हें ।

भलाजी : इमांम की जुबांकी पेहेचांनि की तो निसां हुई, पर इमांमकी सूरति की पेहेचांनि क्यों कर होएगी ?

बाबा : सूरति की पेहेचांनि तो य्यों हें । अपनां नूर हें, सो तो अपने अंदर रखेंगे । सूरत का नूर जाहेर न केरेंगे । य्यों आदममें आवेंगे ।

(भलाजी) : अपनी सूरत का नूर किस वास्तें जाहेर न करेंगे ? सो क्यों कर ?

(बाबा) : जो अपनी सूरति के नूर की जोत, ऐक किरन जाहेर करे, तो ऐ जो चौदे तबक कहूं उड जाए । तिस वास्तें नूर अंदर रखेंगे । देखाई आदमी की न्यांति देंएगे ।

भलाजी : इमांम के अंदर का, जो नूर तुमनें कहा, सो दुनीयां देखेगी के न देखेगी ?

बाबा : मुसलिम रूह तो भली भांति देखेंगे, ओर (पीछे) दुनीयां भी देखेगी ।

भलाजी : दुनीयां अंदर का नूर क्यों कर देखेगी ?

बाबा : ऐ जो मांएने कलांम अला कें खोलेंगे, सो कलांम अलाका नूर दुनीयां में पसरेगा । सो जिन पर जेती मेहेर होएगी, तिन अंदर तेता नूर आवेगा । इन कलांम अला के नूर सेती, रूह अला के अंदरका नूर दुनीयां देखेगी ।

(भलाजी) : कहोजी, इमांम जाहेर किस जिमीं पर होएगे ?

बाबा : इमांम जाहेर चौदे तबक कों होंएगे । ऐ तो सांच हें ।

(भलाजी) : पर अब पेहेले किस जिमीं पर जाहेर होएगे ?

Nijanand App

बाबा : पेहेलें जाहेर हिंदकी जिमी होएगे ।

भलाजी : पेहेलें हिंदकी जिमीं जाहेर क्यों कर होएगे ?

(बाबा) : ऐ बात कछू स्सूले भी फुरमाई हें । ऐ बात स्सूले जाहेर कही हें ।

भलाजी : ऐ बात स्सूले जाहेर क्यों कर कहीं हें ?

बाबा : ऐ बात तो मुसलिम जाहेर जांनते हें ।

(भलाजी) : सो मेहेरबानगी करकें कहो । मुसलिम क्यों कर जातने हें ?

बाबा : जब स्सूल आरब की जिमी आऐ, तब कलमें की हकीकत कही । पर तिस बख्रत तो आगें कुफर था, तिस वास्तें किनों सुन्यां नहीं । पर स्सूल तो आप मेहेरबांन हें, सो तो सबका भला चाहें, तब अली कों बल दे अपनां हुकम का सरुप ख्रडा कीया । सो ख्रडा कर सबन पर मेहेरबांनगी कर, राह बताव़नें लगे । पर उनोंकी अकल उलटी, सो मेहेर को कहर कर देख्रे । तब उनोंकों केहेर की नजर देख्राए कें, सो भी मेहेर के वास्तें । तब जो मेहेर की नजरयो आया, तिन कों मेहेर की नजर, दीनमों लीया, ओर जिन केहेर की नजर देख्री, तिनको केहेर की नजर देख्राए कें, दीनमें लीया । इस भांति उस तरफ के सब मुलको का कुफर भांना । मुसलमांन कर दीन में लीऐं । मुसलिम कों उंमेद लगाऐ । पर तिन बख्रत इमन मुलक था । तहां के लोकों को, आकीन कछुऐ न आया, ओर हिंदकी जिमी ऐ फुरमांन भेजा । सो हिंद के मुसलमांनों, कलमां हक कर सिर चढाया । सो ख्रुस ख्रबर हिंदकी, स्सूल को आई । तब बोहोत राजी होए कें, अपनी नजर हिंद में रख्री । ओर कहा के हम हिंदमें आव़ेंगे । दिलमें ऐ बात साबूत करके, सब मुसलमांनो के आगे कह्या ।

लावारकला ।। अला ।। मुसलमींन इंमन ।।

वारकला ।। अला ।। मुसलमींन हिंद ।।

जब य्यों कहा, तब जो मुसलमांन पास थे, तिनोंनें पूछा - जो य्यों कहा सो क्यां ? तब स्सूलें ज्वाब दीया - ऐ जो ऐते मुलक हें, इन इमन जेसा बेआकीन मुलक कोई नहीं । केती विध करी, पर इन इमन मुलक को आकीन न आया । पर ऐते

Nijanand App

मुलक हें, पर हिंद जेसा मुलक आकीन ऐसा कोई नहीं, ओर कहूं नहीं । ज्यों हिंद, ज्यों हिंद के मुसलमांनो आकीन कर कलमां हक कीआ, त्यों ओर किनों न कीया । य्यों केहेके नेमाज करकें बेठे । नेमाज करके, फेर हिंदकी तरफ, निमाज कर बेठे । ख़ुदाका नांम लेकें हाथ पसारा, ख़ेर मांगी, ओर सबोकों कहा - जो तुम भी ख़ुदाका नाम ले, हिंदकी तरफ ख़ेर मांगो, ज्यों हिंद के मुसलमानों की बरकत, तुमकों भी आकीन आवे । ऐ बात तो सब में जाहेर हें, जो सबों को हिंदकी तरफ ख़ेर मगव़ाई ।

(भलाजी) : कहोजी, जो हिंदकी तरफ ख़ेर मगव़ाई, सो किस व़ास्तें ?

बाबा : सो इस व़ास्तें, जो रसूलें अपनीं नजर हिंदमें रखी । जो इमांम मेहेदी (ओर) हम हिंद में आवेंगे, तिस व़ास्ते सबों को ख़ेर हिंदकी तरफ मगव़ाई ।

भलाजी : रसूलें उनकों जाहेर क्यों न कहा, जो हम हिंदकी तरफ जांएगे, हिंदमें जाहेर होएगे ? य्यों परदे में बातां करी सो क्या ?

बाबा : तो क्या उनोंको य्यों कहें, जो इमांम ओर हम हिंदकी तरफ जांएगे । तिस व़ास्तें य्यों हिंदका नांम ले कहते, तो केतेक मुसलमांन ऐसे थे, जो ऐ बात सुनतें, तो अख़्वा तबही उड जाए । उनोंकों तो य्यों कहते, जो हम तुममें बेठे हें । तिस व़ास्तें केतेक बातां तो जाहेर कहते, ओर केती बातां परदेसें कहते । हिंद में तो आप इमांम आएे की बातां परदा उडाए जाहेर कही हें, जो आकीन सब हिंदकी तरफ मांगें । इन जाहेर बात में तुमको क्यों सक आवती हें ? ओर बातां तो इसारतें बोहोत करी हें ।

(भलाजी) : अजी, य्यों तुम न कहो । तुम्हारे कहेमें मुझे सक नही आव़ती । पर मेरे दिलमों य्यों आया, जो रसूलें जाहेर सीधा क्यों न कहा, जो सारे समझते ?

बाबा : ऐ बातें जाहेर कीऐ कीं (कहने की) नहीं । ओर रसूल हें सो बुजरक हें । इनकी बातें बोहोत इसारतों में होती हें ।

Nijanand App

(भलाजी) : कहोजी, कोई इसारतें बातां ओर भी करी हें ?

बाबा : ऐक इसारति बडी कलांम अलाकी, सुनों । कलांम अलामों, अलाह कों आसिक कहा हें ओर आप हब करके रसूल कों मेहेबूब मासूक केहेते हें । ओर रसूल अपनीं जुबांन सें, जाहेर य्यों केहेते हें - जो में अलाह कों देख्या नहीं । मुझे आडे परदा हें । अब इन इसारतों का माएनां देख्यो, रसूल के आडें परदा हें के नही । आप तो जाहेर य्यों कहते हें, जो मेरे आडें परदा हें । ओर कलांम अला य्यों कहता हें, जो रसूल कों परदा कदीं नहीं ।

भलाजी : रसूल के आडें परदा नही सो क्यों कर ?

बाबा : आसिक कदीं मासूक आडें परदा करे नहीं । आसिक मासूक तब कहीऐ, जब ऐक सूरति (अंग) होए । तो मासूक आडें परदा क्यों होए ? अब ऐ मांएनें देख्यो । जाहेर तो परदा केहेते हें, ओर इसारतों में दोनों ऐक केहेते हें । य्यों आरबों सें जाहेर कहते हें, जो हम तुममों बेठे हें, ओर इसारतों मों कहते हें, जो हम तेहेकीक हिंदमें बेठे हें ।

(भलाजी) : कहोजी, अब इमांम जाहेर कब होंएगे ?

बाबा : इमांम जाहेर आख्रर कों होंएगे ।

(भलाजी) : सो आख्रर कब आवेंगी ?

(बाबा) : सो आख्रर आई । ऐही दिन आख्रर के हें ।

(भलाजी) : आख्रर आऐ के निसां क्यों कर हें सो कहो ।

(बाबा) : जब इमांम आंवेंगे, तब जो ख्रेल देख्रनेवाले मुसलिम हें, सो सब इमांम के साथ आवेंगे । पेगंमर फिरस्ते सब आंवेंगे । तब ऐ जो ख्रेल गफलतका, देख्रनें को कीय्या हें, ऐ सब ख्रेल जोरा करेगा । ऐ जो भेख्र गफलत के धरे हें, भांति भांतिके, सो सब इमांम की आंमदांनी में सब जोरा करेंगे । सबों में बुधि जोरा करेगी । ओर इन ख्रेल गफलत में दजाल ख्रडा हें, ऐ भी गफलत की सूरत बोहोत जोरा करेगी । सो मुसलिमों को घेर लेएगा । तिस बख्रत ईसा पेगंमर आवेंगे । दजाल सों

Nijanand App

जंग होएगी । दजाल मुसलिमों पर फंद कै डारेगा । सो फंद ईसा पेगंमर सारे तोडेंगे । सो जंग के फंद कछू आलम न देखेगी ।

भलाजी : आलम न देखेगी सो किस वास्तें ?

(बाबा) : ऐ दजाल के गफलत के फंद कछू ऐसे नहीं, जो सब आलम के छूटि जांए । तिस वास्तें आलम न देखेगी । ओर मुसलिम तिस बख्त पास होएगे सो देखेंगे, जो दजाल के फंद तोडे । पर मुसलिम भी दजाल कों जाहेर न देखेंगे । पर मुसलिमों से इनका जोरा न चलेगा ।

भलाजी : मुसलिम फंद तोडे देखें ओर दजाल कों न देखेंगे, सो किस वास्तें ?

बाबा : दजाल तब नजरों आवे । ऐन दजाल गफलत के फंदों में, आलम सब पडेगी । तिस वास्तें सब आलम के फंद टूटें, गफलत सबकी उडे, तब दजाल कों सब देखेंगे । दजाल सों जंग हुआ, सो भी तब देखेंगे । तिस वास्तें तिस बख्त मुसलिम न देखेंगे ।

भलाजी : ऐ निसांन जो तुम कहे, सो हम इमाम पे सुनेंगे । कछू ओर भी निसांन होए सो कहो ।

बाबा : (सात निसांन बडे क्यांमत के ओर लेलत कदर का दरवजा सो सब इमांम मेहेदी खोलेंगे ।) एसके आगें इमांम का हुकम आवेगा । कुरांन के मांएनें जाहेर होएगे । तब असराफील नूर का पसारा करेगा । सो नूर मुसलिमों का दिल साफ करेगा । इसके आगे इमांम जाहेर होएगे, तब दजाल के गफलत कें फंद टूटेंगे । तब दजाल मरतें सोर बोहोत करेगा । ऐसके (दजाल के) फंद सबों पर सें उडेंगे । तब दजाल सबकी नजर आवेगा । जाहेर होए कें उडेगा । इसक पेदां होएगा ।

भलाजी : असराफील क्या इमांम के सांमिल आवेगा ?

बाबा : य्यों नही आवेगा । सुनों जो कहों । पेहेले तो तुमकों कहा हें,

Nijanand App

जो पेगंमर ईसा आवेगा, तिसके आगें इमांम आवेंगे। तिसके आगें असराफील फेरस्ता आवेगा, पर जाहेर एकै बार होएगे।

भलाजी : रसूल कब आंवेंगे ?

बाबा : रसूल तो इमांम के साथ हें।

भलाजी : तुमनें ओर की आंमदनीं कही, ओर रसूल की न कही, सो किस वास्तें ?

बाबा : तुम इमांम मेहेदी, रूह अला ओर अलाका रसूल, तुम क्या जुदे कर कर देखते हो ? इमांम रसूल की तुमकों ऐती पेहेचांनि कर दी हें, तो भी इमांम सेतीं रसूल कों जुदां पूछते हो। बाबा, जो मांएनां सुनीऐं सो दिलमें रखीऐ, छोडीऐ नहीं।

भलाजी : तुम इमांम रसूल सांमिल कहे, तो रसूल फुरमांन जुदा आगें क्यों कर ल्याऐ ?

बाबा : रसूल आया व्यों कर हें, ज्यों हुकम हाकिम के सांमिल हें। ओर हुकम चले भी। हुकम चलावे भी। हुकम आवे भी। हुकम सांमिल भी। व्यों इमांम मेहेदी, रूह अला ओर रसूल, जुदे भी हें, भेले के भेले हें। जुदे नहीं कहे, ओर जुदे भी हें।

भलाजी : ऐ निसांन तुम आखर के कहे, सो तो ओऐ मिले। अब इमांम जाहेर कब होएगे ?

बाबा : इमांम ग्यारे सदीमें जाहेर होंएगे।

भलाजी : ऐती मेहेरबांनगी करकें कहो, जो अग्यारे सदीके दरम्यांन, कब जाहेर होंएगे ?

बाबा : ईसा पेगंमर आऐ। इमांम रसूल आऐ। नूरी फिरस्ता रूहल अमीन (जबराईल) आया। असराफील आया हें। मुसलिम रुहें इसक ले भी आऐ हें। ओर फेर फेर क्या पूछते हो ? अब ही जाहेर हूऐं देखोगे।

भलाजी : ऐ जो तुम मेहेरबांनगी करी, सो तो मेरी निसां हुई। पर इमांम रसूल हम कब जाहेर देखेंगे ? ज्यों आखर के निसांन बताए दीऐ, त्यों कोई इमांमकी निसांनी भी बताओगे ?

Nijanand App

बाबा : इमांम के निसांन तो तुमकों बताऐ हें। पेहेलें तुमकों कहा हें, जो इमांम का हुकम आगें आवेगा। कलांम अलाके मांएनें आगें सें खुलेंगे, सो तो खुले हें। अब य्यों देखो कुरांन पढे बिनां, जो मांएनां जो तुम पूछते हो, सो में खोल देता हों। ओर भी जो पूछोगे सो भी खोल देंउगा। तो इमांम मिले बिना, क्यों कर खोले जाए ? तिस वास्तें ऐ तो सही, हुकम कलांम अलाह का, कलमां के मांएनें, जो तुमकों कहता हों। अजूं फेर फेर निसांन पूछते हो सो क्या ?

भलाजी : ऐ तो तुम मेरी निसां करी, पर ऐ अब कहो, जो इमांम जाहेर हुऐ, तब सबमें (समया) केसा होएगा ? ओर अला रसूल काजी होए बेठेंगे, कलांम अला हाथ में लेंएगे, सब रुहोंकी पुरसिस करेंगे, सो क्यों कर करेंगे ?

बाबा : काजी की तो तुमकों कही हें पेहेलें, सो क्या तुम दिलमें ली नहीं ? जब इमांम मेहेदी रुहअला, कलांम अला, कलमें के मांएनें खुले, जिमीं जिहांन जुमल (नूरसेपुर हुई। सब) पर नूर बरस्या। सब में नूरकी रोसनाइ हुई। रुह सबों कों, अरस नूर भिस्त अपनीं हदें सबोकों पोंहोंचाऐ, तो क्या कजा अजूं ओर होएगी ?

भलाजी : क्या कजा इमांमें करी ?

(बाबा) : इमांम कों, तुम क्या अला रसूल थे जुदा कर देखते हो ? तुमकों केती बेर कहा हें। जो अला रसूल दो कहे नहीं जाते, दो कहें कुफर होता हें, तो इमांम काजी रसूल ऐ जुदे क्यों कर कहे जांए ? अब तुम य्यों समझो। कुरांन के मांएने काजी बिनां कोंन खोले ? ओर कलांम अला की इसारतें, रुह अला बिनां जाहेर कोंन करे ? जो जो काई कांम कीऐ हें, साई सोई नाम धरे हें। फुरमान ल्याऐ (वास्तें) रसूल नांम धरा। कलांम (अलाकी) इसारतें खोले, (वास्तें) रुहअला नांम कहा। फुरमांन (कुरान) के मांएनें खोले, सबके हिसाब कीऐ, तिन की पुरसीस,

Nijanand App

भिस्त जाहर कीऐ, वास्तें काजी नांम धरा । आगें होए कें सबको राह बताई, उंमेद पोंहोचाऐ, वास्तें इमांम नांम धरा । आख्रर अपनी हदें, आए सबों कों हद कर दीऐ, वास्तें मेहेदी नांम धरा । ऐ पांचो कांम वास्तें पांचो नांम धरे हें । सो पांचो क्या जुदे होएगे ? जो दो कहीऐ तो कुफर होता हें । ऐ सब (एकै) ख्रांवद के कांम हें । बाबा, ऐ कलांम अलाकी इसारतें बिनां हिसाब हें । अब जो तुम काजी की फेर पूछी, सो भी सुनों । ओर बेर कहो । इन दोर में इमांम रसूल काजी होए बेठेंगे । सब रूहों कों मेहेर की नूर की नजर में लेवेंगे, तब सब रूहों कों काजी रसूल की पेहेचांनि होएगी । तिस पेहेंचानि सेतीं, इमांम रसूल का नूर सबों में आवेगा । तिन सेती असलू इसक उपजेगा, जोस उपजेगा, आकीन उपजेगा, बंदगी उपजेगी, असलू अकलि उपजेगी, तिनसें असल ख्रोज उपजेगी, सांच उपजेगा, झूंठ कुफर कहुं उड जाएगा । तब तिस नूर मांफक, इसक मांफक, जोस मांफक, आकीन मांफक, बंदगी मांफक, अकल मांफक, ख्रोज मांफक, सांच मांफक, ऐ सब नतीजा पांवेंगे ।

भलाजी : तो क्या नतीजा कमजादा पांवेंगे ? (ऐ क्यों कर हें ?)

(बाबा) : नतीजा कमजादा, इत नजर आवेगा । आख्रर अपनें अपनें ठोर पोंहोंचे पीछे, कमजादा कछू न होएगा ।

भलाजी : इत कमजादा देख्राई देएगा, सो क्यों कर देख्रांई देएगा?

बाबा : किसी पर मेहेर अंदर के नूरकी होएगी । किसी पर मेहेर इसक की होएगी । किसी पर (मेहेर) जोसकी होएगी । (किसी पर मेहेर बंदगी की होएगी ।) किसी पर मेहेर आकीन की होएगी । किसी पर मेहेर की नजर होएगी । किसी पर अकल की मेहेर होएगी । किसी पर ख्रोज की मेहेर होएगी । ख्यों कै भांति की मेहेर जुदी जुदी होएगी । (तिस माफक नतीजा पावेंगे ।)

भलाजी : इमांम के दोरमें सब आऐ, फेर इतनी तफावत कही सो क्यों

Nijanand App

होएगी ?

बाबा : ऐ तफावत य्यों होएगी । कोई अपनें अंग होए कें हमेसां पास रहेंगे । कोई मजलसमें बेठेंगे । किन सों मजलस करेंगे । कोई मजलसकी आस करेंगे । कोई हंमेसां ख्रिजमत में रहेंगे । कोई ख्रिजमत की आस करेंगे । कोई दीदार पावेंगे । कोई दीदार की आस करेंगे । य्यों बोहोत (भांत) तफावत देखेंगे । ऐ तफावत नतीजा, य्यों बोहोत भांति तफावत देखेंगे, पर मेहेर की नजर सबों पर होएगी । क्यांमत हुऐ पीछें, अपनें अपनें मुकांम तफावत कछू नहीं ।

भलाजी : काजी कजा क्या क्यांमति हुऐ पेहेले करेंगे ?

बाबा : कजा हे सो पुरसिस हें । सो पुरसिस पाऐ बिनां भिस्तमें क्यों कर पोहोंचेंगे ? भिस्त में नूर की नजर पोहोंचे, तब पुरसिस न होए । ऐ पुरसिस दोजक ऐसी (इसी) जिमीं होएगी ।

भलाजी : तुमोनें कहा, जो पुरसिस बिनां, रूहे क्यांमत में न उठेंगे । ओर ऐ रूहें ग्रो (गिरोह) मिनें, अला रसूल की उमेद कर सोऐ हें, तिनकी पुरसिस क्यों कर होएगी ?

बाबा : सो रूहे सारे अपने दिलसों आपको पुरसिस का दे सोऐ हें ।

भलाजी : क्यों पुरसिस दे सोऐ हें ?

(बाबा) : य्यों आपने दिलकों पुरसिस आप दे सोऐ हें । जो कछूऐ बद फेल करेंगे, सो हिसाब जिमीं लेवेगी । सो रूह सब जिमीं को अपनी पुरसिस, फिरस्तों को दे रहे हें । य्यों क्यांमत में उठ खडे होएगे ।

भलाजी : ऐ भी मेरी निसां हुई । ऐ कहो जो एत बडा नतीजा किनका होएगा ?

बाबा : बडा नतीजा हिंदुस्तांन का होएगा, जहां इमांम रसूल अपनी मजलस कर बेठेंगे । अब हिंद के नतीजे की में क्यों कर कहों ? कै इंड पेदां होए कें फना होएगे । पर इन इंड बराबर न कोई हुआ, न कोई होएगा । ओर भी सुनों । जो इंड होए गऐ हें,

Nijanand App

तिनमें कै ओलीऐ अंबीऐ, बिनां हिसाब हुऐ हें, ओर इनमें भी बोहोत बुजरक होएगे । पर जो सुख्र इन दोर में, सब आलम के रूह पावेगी, सो किनों सुपने भी नहीं देख्या । तो जिन हिंदुस्तांन में बेठ ऐ मजलस ऐ बिलास करेंगे, तो इन हिंद के नतीजे की में क्यों कर कहों ? पर ऐ एक भी सुनों । हिंद थें सेंद (सिंध) पर बडी मेहर होएगी ।

भलाजी : सिंध पर मेहेर क्यों कर होएगी ?

बाबा : सिंध कों आर्कीन इसक, अंदर के नूर की, अपनें जोस की, इन सब बातों की मेहेर हुई हें । सो इन जुबां कही नहीं जाती हें ।

भलाजी : तुमों तो हंम पर मेहेर करकें कहा, सो तो मेरी निसां हुई । अब इमांम रसूल पेगंमर, फिरस्ते मिलेंगे, तहां मजलस होएगी, तिनमें बातां केसी करेंगे ? सो बात कछू रसुलने फुरमांई हें ?

(बाबा) : सो तो तुमकों पेहेले कहा हें । जो हरफ रसुलें कानों सुनें, पर लिख्ये नहीं, सो बातां सारीं इनमें (मजलस में) होएगी ।

भलाजी : सो बातें केसी होएगी ?

बाबा : जो कलांम अला मों, जो गुझ इसारतें करीयां हें, सो तो सारे आलम में फेलेगीं । ओर जो रसूलें कानों सुनें पर लिख्ये नहीं, सो बातां सारीं इन मजलस में होएगीं ।

भलाजी : कोई तिन बातोंमें सें मेहेरबांनगी करकें कहों । मेरा दिल सुननें कों चाहता हें ।

(बाबा) : इन मजलस की बातां पूंछते हो, सो सच में कहों, पर नहीं कहता सो इस वास्तें, जो दोर होता हें, पर जाहर नही हुआ । तब तोडीं पछले (पिछले) दोरके (आदमी) ऐ बातां सुनि न सकेंगे । ए बातां रसूले इसी वास्तें कुरांन में लिख्या नहीं ।

भलाजी : तुम्हारे दिल आवे तो कहो ।

बाबा : ऐ बातां नूर क्या नूरतजला ? क्या वतन ? क्या अपने अंदर ? क्या तो के भांते ? क्या तुम दोर ? क्या जाहेर हुऐ बिनां क्यों कर

Nijanand App

सुनों ? (बाबा, ऐ बातां नूर ओर नूरतजला की हें । अपने अंदर की हे । सो तो तुम दोर जाहेर हुऐ बिगर क्यों कर सुनोंगे ?)

(भलाजी) : अजी, जो तुम कहोगे, तिसमों मेरे दिलमें सक न आवेगी । सो तो तुम जांनते हो, में सो क्या कहो ?

बाबा : ऐ बातां बोहोत बडी हें । ऐ कलांम अलाकी हें, सो जाहेर हुऐ बिनां कहीं सुनीं नहीं जाती हें ।

भलाजी : ऐ बातां कहेनेका कछू रसुलें फुरमाया हें के नहीं ?

बाबा : जब तोडी कलांम अला के मांएने नही खुले, तब तांई केहेनां मांएनें का दुरस्त न होवे । नहीं फुरमाया तिस वास्तें । ओर जब मांऐनें खुलें तब तो फुरमाया हें । ओर में तो (रसुल के) फुरमाऐ बिनां बात न करो ।

भलाजी : कलांम अला कीं कछू ओर भी (गुझ) इसारतां हें ?

बाबा : तुम क्या जांनते हो ? जो रसूल का फुरमाया सब कहा । ऐ तो में तुम्हारे आगें, मांएनें की ऐक लेहेजा, इसारतां करी हें । ऐ तो जो तुम पूछा सो में कहा । मांएनें तो तुमको अब कहोंगा, पर दोर (जाहेर) हुऐ कहोंगा । ऐ कलांम अला कीं बातें बोहोत बडी हें ।

भलाजी : बोहोत बडीया हें सो किन भांति कीं हें ? भला जो कदी जाहर कर नें (ना) कहो, तो इसारतांमो कहो ?

बाबा : ऐ तो मांएनें तुम्हारे तांई जाहेर खोल दीऐ । तुम कछू समझे, जो भिस्त सो कहां हें ? नूर सो कहां हें ? नूर तजला सो कहां हें ? हम किस जिमीं पर बेठे हें ? हम नूर की किस तरफ हें ? नूर तजला के किस तरफ हें ? ऐ कछू तुम समझे ?

(भलाजी) : अजी ऐ तो में समझा नहीं । कहोजी, इन बातों क्या नूर ओर नूरतजला की नजरयों भी आवे ?

बाबा : जो नजरयों न आवे, तो अपनें वतन (मोमन) क्यों कर पोहोचेंगे? रसूलकी ऐसी बातां नहीं, जो अरस भिस्त नजरयों न आवे।

भलाजी : अरस भिस्त क्यों कर नजर आवे ?

(बाबा) : इमांम रसूल के अंदर के नूर सेतीं अंदर की नजरों आवे ।

Nijanand App

भलाजी : इन नजरों भी आवे ?

बाबा : इन नजरों भी आवे ।

(भलाजी) : कहोजी, इन नजरों क्यों कर आवे ?

(बाबा) : अपने वतन की बातां इमांम (असलु) मुसलिमों के आगे करेंगे, सो मुसलिम ज्यों ज्यों सुनेंगे, त्यों त्यों इमांम वतन के निसां देते जांएगे । सो निसांन मुसलिमों के दिलमें साहिदी देते जांएगे, त्यों त्यों मोमिन पूछते जांएगे । इमांम भी मेहेर कर तिन भांत कहेंगे, ज्यों वतन सारा याद आवेगा । जब वातन (वतन) यादि आवे, तब जाहेर नजरों आवेगा, ओर देखोंगे ।

भलाजी : तिसके आगें क्या नींद दूर होएगी ?

बाबा : क्यांमत हुई । नींद उडी । मुसलिम अपनें अरस में उठ बेठें । (अपनी असलू बातां करने लगे ।) क्यांमत बरहक हुई ।

।। ज्वाब सवाल तमांम ।।

Nijanand App

सनंघ ईसा ईमामके कजा की

इत ईसा मसी आए के, पेहेले किया सरंजाम ।
काटे आऊध दजालके, पीछे आए रसूल इमाम ॥ १ ॥
अब सब्दातीतकी सब्दमें, सोभा वरनी न जाए ।
जो कछू कहूं सो सब्दमें, बोलूं कौन जुबाएं ॥ २ ॥
खूबी तखत ना केहे सकूं, इन जुबां के जोर ।
जांनूं रात कुफरकी मिट गई, हुआ दिन जाहेर भोर ॥ ३ ॥
हिसाब नहीं उजास को, आगे ले खड़ा लदुन्नी नूर ।
जाए ना बरन्यो इन जुबां, खड़ी अरस अरवा हजूर ॥ ४ ॥
आगे खड़ा असराफील, और जबराईल हुकम ।
जोस सब रुहन पर, वतन बका खासम ॥ ५ ॥
यों बैठे तखत इमाम, सिर छत्र कई चंवर ।
रसूल अली आए मिले, हुई बधाइयां घर घर ॥ ६ ॥
गुझथे मोमिन अरस के, ताकी जाहेर हुई खबर ।
सो बैठे घेर इमाम को, हुई बधाइयां घर घर ॥ ७ ॥
कई औलिए कई अंबिए, कई फिरस्ते पैगंमर ।
सो सब आगे आए खडे, हुई बधाइयां घर घर ॥ ८ ॥
आइयां किताबे जिन पर, बुजरग जो मेहेतर ।
मुसलमान आए संग, हुई बधाइयां घर घर ॥ ९ ॥
मुसलमान कई भेखासों, पीर मरद फकर ।
पीछा कोई ना रेहेवही, हुई बधाइयां घर घर ॥ १० ॥
जुदी जुदी जातें जहानमें, सब आवत हैं मिलकर ।
होत दीदार सबन को, हुई बधाइयां घर घर ॥ ११ ॥
दुनियां चारों खूंट की, सब आवत हैं एक दर ।
मंगल गावें सब कोई, हुई बधाईयां घर घर ॥ १२ ॥
जो कबूं कानों ना सुनी, जात वरन भेख घर ।
आवत सब उछरंग में, हुई बधाइयां घर घर ॥ १३ ॥
बिना हिसाबें आलम, बैराट सचराचार ।
दौड़त सब दीदार को, हुई बधाइयां घर घर ॥ १४ ॥
अरवा चौदे तबकों, जो कोई नारी नर ।
इन तखत इमाम के कदमों, हुई सारोंकी नजर ॥ १५ ॥

Nijanand App

श्री निजानंद संप्रदाय के अन्य प्रकाशन

प्रकाशन	न्योछावर (रु.)
(१) श्री कुलजम स्वरुप (मूल)	५५०
(२) श्री कुलजम स्वरुप (अर्थ के साथ)	८००
(३) श्री बीतक साहेब (मूल)	८०
(४) श्री बीतक साहेब (अर्थ के साथ)	३००
(५) श्री परमधाम पटदर्शन (चर्चनी के साथ)	३००
(६) श्री परमधाम पटदर्शन (सिर्फ नकशा)	१५०
(७) संसार और मेरा भरतार (हिन्दी)	७०
(८) श्री निजानंद संप्रदाय एवं हिन्दु धर्म	१५
(९) श्री देवचंद्रजी की पाती (हिन्दी मूल)	१५
(१०) सत्यांजलि	३०
(११) विराट पटदर्शन (रंगीन नकशा)	१००
(१२) माहेश्वर तंत्र	१००
(१३) भागवत यथार्थम्	१५
(१४) बडी वृत लालदास कृत	६०
(१५) पुराण संहित (अर्थ के साथ)	१५०
(१६) सत्य दर्शन (हिन्दी)	५०
(१७) परमधाम चर्चनी (छोटी वृत्त)	२०
(१८) संसार अने मारो भरथार (गुजराती)	६०
(१९) श्री निजानंद भजनावली (गुजराती)	१०
(२०) सच्चिदानंद स्वरुप - संक्षिप्त (गुजराती)	२०
(२१) सच्चिदानंद स्वरुप - विस्तृत (गुजराती)	५०
(२२) श्री सरकार प्रश्नोत्तरी (गुजराती)	२०
(२३) श्री निजानंद संस्कार पध्धति (गुजराती)	२०
(२४) सृष्टि सर्जन (नकशा) २ नंग	५
(२५) श्री निजानंद दर्शन	५०
(२६) श्री देवचंद्रजी नी पाती (गुजराती भावानुवाद)	१०
(२७) बुध्ध गीता अने बुध्ध स्तोत्र (गुजराती अनुवाद)	१५
(२८) सेवापूजा	२५
(२९) निजानंद	२५
(३०) नित्यपाठ	७
(३१) जागणी अभियान मासिक पत्रिका लवाजम	७५
(३२) Mahersagar	२०
(३३) Holy Bible & Lord Prannath	५०
(३४) Nijanand, The Path to Eternal Bliss	२०

Nijanand App

श्री निजानंद संप्रदाय की केसेटे

किमंत

(१) परमधाम दर्शन - (वीसीडी ३ के सेट).....२५०
(२) सरकार श्री की वितकसाहेब चर्चा - (वीसीडी ४२ का सेट)...१५५०
(३) ब्रह्मवाणी (वीसीडी ६ का सेट).....३००
(४) सत्यप्रकाश (वीसीडी १० का सेट).....५००
(५) भजनमाला - (ओडीयो केसेट भाग १ से १०) दरेक नंग के.....३५
(६) भजनमाला - (सीडी. भाग १ से १०) दरेक नंग के.....५०
(७) किरंतन - (ओडीयो केसेट भाग १ से ७) दरेक नंग के.....३५
(८) श्री मुखवाणी (ओडीयो केसेट भाग १ से ४२) दरेक नंग के.....३५
(९) सेवापूजा (ओडियो केसेट - मंगला/संध्या) दरेक नंग के.....३५
(१०) सेवापूजा (सी.डी. - मंगला/संध्या) दरेक नंग के.....५०
(११) धून (ओडीयो केसेट १,२) दरेक नंग के.....३५
(१२) धून (सी.डी.)१,२) दरेक नंग के.....५०
(१३) नजर नजर से - गझल (ओडीयो केसेट).....३५
(१४) नजर नजर से - गझल (सी.डी.).....५०
(१५) ब्रह्मवाणी (ओडीयो केसेट).....३५
(१६) ब्रह्मवाणी (सी.डी.).....५०
(१७) ओन्ली इश्क (ओडीयो केसेट).....३५
(१८) ओन्ली इश्क (सी.डी.).....५०
(१९) श्रध्धा सुमन (ओडीयो केसेट).....३५
(२०) श्री राजजी के दिल के अंग (सी.डी. भाग १ से ६) दरेक नंग के..५०
(२१) श्री श्यामाजी का सिनगार (सी.डी.).....५०
(२२) साहेलडी (ओडीयो केसेट भाग १ से ४) दरेक नंग के.....३५
(२३) साहेलडी (सी.डी. भाग १ से ४) दरेक नंग के.....५०

Nijanand App

॥ सिक्का हजरत इमाम मुहम्मद मेहेदी साहेब आखिरूल्जमानका ॥

॥ अर्थात् श्रीबुद्धनिष्कलंक (कल्की) अवतार श्री प्राणनाथजी की मुद्रा ॥

सिकये जद बर सरे आं किब्लये हर दो जहान् ,
मालिके दीने मुहंम्मद महदीये आखिर जमान् ।
कातिले कुफारे आलम मजहरे शेरे खुदा ;
रौनेके दीने मुहम्मद नायबे मुश्किल कुशा ॥ १ ॥

अर्थ-मोहर मारी है दोनों जहानके उस बडे आदमीने, (कि जो) मुहम्मदी दीनके मालिक (और) आखिर जमानेके महदी हैं । आलम (तमाम दुनिया) के काफिरोके कातिल (काट डालनेवाले) है, और खुदाके शेरके (खुदाई वीर बहादुरके) मजहर (जाहेर -प्राकट्य - होनेकी जगह) है, मुहम्मदके दीनकी रौनकके नाइब (सहायक-आसिस्टेंट, स्थानापन्न) और मुश्किलको दूर करनेवाले है ॥ १ ॥

यह मुद्रालेख श्री प्राणनाथजी सं. १७३५ सन हिजरी १०९० में बनवाकर औरंगजेबादि खलीफा सूबा उमराव काजी मौलवी बगैरह पर लिखी जाती पत्रिकाओ पर मारा करते थे । इसमें कुफारे आलम (दुनियाके पापी) से जाहेरी मुंहमदकी जाहेरी शरामें दुनियाके गैर मुस्लिम मुराद है, लेकिन बातिन आखिरी मुंहमदके दीन इस्लाम हकीकी (ब्राह्मधर्म) में अज्ञान अविद्या कलिकलंक ईर्षाद्वेष वैरविरोध कल्मषादि दोष दुर्गुण मुराद हैं।

इसके बाद छोटा सिक्का भी है, जो इस प्रकार है -

फकीर सैयद मुहम्मद इब्न इस्लाम सन हिजरी १०९२

Nijanand App